सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक : 7 • 5 अक्टूबर 2019 • मूल्य : 20 रु.

केयुप-केएमपी का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन धुलिया 21-22 सितंबर की झलकियां

।। श्री सिणधरी मंडन आदिनाथाय नमः ।। ।। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ।। ।। श्री चंद्रप्रभस्वामिने नमः ।। ।। श्री महावीराय नमः ।।

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकान्तिसागरसूरि गुरुभ्यो नमः ।।

सिणधरी (राज.) निवासी, हाल अहमदाबाद

श्रीमती जसोदादेवी वंसराजजी मण्डोवरा परिवार आयोजित

राजनगर अहमदाबाद-शाहीबाग से

विश्व विख्यात श्री शंखेश्वर महातीर्थ का

भव्यातिभव्य 10 दिवसीय

छ'रि पालित पदयात्रा संघ

प्रसंगे पधारने हेतु

भावभरा हार्दिक आमंत्रण

पावन मंगल निश्रा एवं प्रेरणा

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पू. गुरु भगवंतो का प्रवेश

पोष वदि 3 शनिवार

दि. 14 दिसम्बर 2019

संघ प्रयाण

वि. सं. 2076 पोष वदि 5

सोमवार

दि. 16 दिसम्बर 2019

संघ माला

वि. सं. 2076 पोष वदि 14

बुधवार

दि. 23 दिसम्बर 2019

निमंत्रक

सिणधरी (राज.) निवासी

चंपालाल, भंवरलाल, बाबुलाल, छगनराज एवं

समस्त मण्डोवरा परिवार

बंगला नं. 2-3, सद्भाव सोसायटी, ओमटॉवर के सामने,

शाहीबाग, अहमदाबाद

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि
इच्छा हु आगाससमा अणन्तिया।।

कदाचित् सोने और चांदी के कैलास पर्वत समान असंख्य पर्वत मिल जाएँ तो भी लोभी मनुष्य को संतोष नहीं होता, क्योंकि इच्छा आकाश के समान अनंत है।

A greedy person is not satisfied even if he accumulates gold and silver worth numerous kailas mounains because desire, like the sky, is endless.

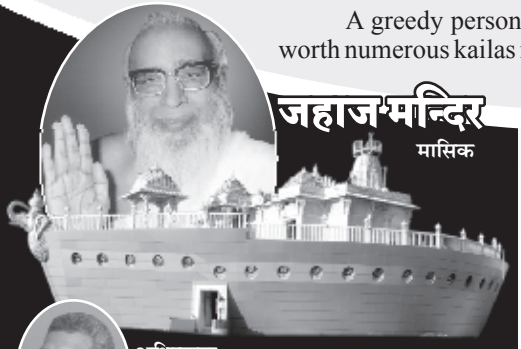

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 7 5 अक्टूबर 2019 मूल्य 20 रु.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
4. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. खरतरगच्छीय श्रावकों का शासन-प्रेम	महोपाध्याय विनयसागरजी	10
6. जिज्ञासा	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	14
7. दीपावली पूजन विधि एवं मुहूर्त्त		15
8. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	आसिफाबाद	20
9. हाला संघ का इतिहास		25
10. शास्त्रों में गुरुमूर्ति का उल्लेख		26
11. वीर प्रभु आ रे	पवन कोठारी, जैसलमेर	27
12. समाचार दर्शन	संकलित	28
13. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	42

नूतन वर्ष प्रारंभ वीर संवत् 2546 (दि. 29 अक्टुबर) का संदेश

प्रिय आत्मन् !

जब सैकंडों में परस्पर योग होता है तो मिनिट का निर्माण होता है.... मिनिटों से ही घंटे की काया बनती है... घंटों की कतार से ही दिन का दर्शन होता है... दिवसों की दक्षिणा प्राप्त करके ही सप्ताह अपना रूप प्रकट करता है...

सप्ताहों के सहयोग से ही महिने की निर्मिति होती है...

और महिनों के मिलन से ही संवत्सर का सौभाग्य साकार होता है...

ऐसे संवत्सर के सौभाग्य का संदेशवाहक सूर्योदय हमारे जीवन में उदित हुआ है। यही सूर्योदय नये वर्ष के मंगल प्रभात के रूप में बधाया जाता है। इसे बधाना है आन्तरिक भावों से... इसे बधाना है हृदय के दृढ़ संकल्प से.... इसे बधाना है हर सूर्योदय को सार्थक करने की प्रतिज्ञा से...

-आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

विज्ञापन हेतु हमारे मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

एक व्यक्ति बगीचे में बैठा था।

उदास था। सिर पर हाथ रख कर सोच में पड़ा था।

थोडी देर बाद उसका मित्र वहाँ आया था। उसने अपने मित्र को उदास देखा तो पूछा- क्या हुआ? उदास क्यों है? क्या चिंता है?

उसने कहा- सर्दी बहुत ज्यादा थी!

-थी! मतलब!

गत वर्ष बहुत ज्यादा थी। गत दिसम्बर और जनवरी के महिने को याद करता हूँ तो कांप उठता हूँ।

मित्र हैरान हुआ। उसने कहा- गत वर्ष ज्यादा थी। इस वर्ष तो नहीं है। अभी जनवरी का महिना चल रहा है। सर्दी इतनी ही है, जितनी सहन की जा सकती है।

तूं गत वर्ष की सर्दी को याद कर दुखी क्यों हो रहा है!

कुछ ही पलों बाद वह ललाट पर आये पसीने को पोंछने लगा। मित्र प्रश्न भरी निगाहों से देखने लगा।

मित्र की दृष्टि से छाये प्रश्न को समझ कर बोला- कल अखबार में छपी खबर पढ़ कर बहुत परेशान हो गया हूँ।

मित्र ने पूछा- क्या खबर थी!

उसने कहा- लिखा था कि इस वर्ष मई-जून में बहुत खतरनाक गर्मी पडेगी। वर्षो का रिकॉर्ड टूट जायेगा। गर्मी 50 डिग्री को पार कर देगी।

दोस्त मुस्कराया। उसने कहा- जो गर्मी अभी तक आई नहीं है। उसे लेकर तुम्हें अभी से पसीना आ रहा है। बगीचे में बैठे हो। आज के आनंद का अनुभव करो। कल के दुख से क्यों दुखी होते हो!

पर हमारा मन ऐसा ही है।

वह आज में नहीं, कल में जीना चाहता है।

और इसीलिये दुखी होता है।

आज का दुख इतना ज्यादा नहीं होता, जितना कल का दुख होता है।

और जो व्यक्ति कल के दुख से दुखी होता है, उसे सुखी करने का कोई उपाय नहीं है।

न बीते हुए कल में जीयो...

न आने वाले दुख से परेशान बनो...

कल के पतझड़ का स्मरण कर आज के वसंत को योंहि विदा न करो।

सोलह सतियाँ
कथानक
13

विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

स्वकथित इस वाक्य के साथ ही द्रौपदी वर्तमान में आयी और गहरा निसास छोड़ती हुई सोचने लगी- ओह! विवेक के अभाव में की गयी छोटी सी मजाक कैसे जी का जंजाल बन जाती है। वास्तव में अस्त्र-शस्त्र के घाव बहते समय के प्रवाह में इस कदर भर जाते हैं कि कभी कोई घाव नजर ही न आये पर मर्मभेदी शब्दों का घाव व्यक्ति चाहकर भी नहीं भर पाता है। निस्सन्देह मेरी कटु शब्दावली के प्रति मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

दो पल के मौन के बाद द्रौपदी बोली- देवरजी! इसमें कोई दोहराय नहीं कि मेरे शब्दों के तीर ने आपको घाव दिया है पर बड़े लोग हमेशा बड़े दिल वाले होते हैं। अपनी गलती के लिये मुझे अत्यन्त खेद है। मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। आप क्षमा करके बड़प्पन को प्रस्तुत कीजिये।

नहीं, कभी नहीं ऽऽऽ ! उस घाव का मरहम तेरा प्रेम भाव ही हो सकता है। कुछ भी हो जाये, तूं मेरी होकर रहेगी।

बस....बस, बन्द कर तेरी बकवास। क्यों अश्लील शब्दों से अपनी जुबान को और मेरे कर्णपटलों को गंदा कर रहा है। यह सोच कर चलना कि तूं मेरे हाथ भी नहीं लगा सकेगा। यदि हिम्मत की तो जलकर वहीं भस्म हो जायेगा।

द्रौपदी ऽऽऽ ! दुर्योधन गरज उठा। मैं अभी तेरे शील को खण्ड-खण्ड कर सकता हूँ। सत्ता की शक्ति के आगे शील की ताकत है ही क्या जो तूं इतना झूठा दंभ भर रही है।

शील की ताकत का अनुमान विलास की गंदी नालियों के कीड़ें भला कैसे लगा पायेंगे। यह मेरी स्पष्ट चुनौती है कि मेरे शील-बल के सामने सत्ता की शक्ति बौनी ही ठहरेगी। कहती हुई द्रौपदी का चेहरा तेजस्विता से प्रदीप्त हो उठा।

तुझे अपने सतीत्व का इतना ही अभिमान है तो आज उसे चूर-चूर कर देने के लिये कृतसंकल्प हूँ। दु:शासन! उठो मेरे प्यासे नयनों को इस अनुपम सौन्दर्य का रसपान करवाओ।

दु:शासन ने पूछा- क्या इस भरी सभा में ?

हाँ! आज, अभी, इसी पल और इसी भरी सभा में। दु:शासन संकोच से सिमट गया। उसे निष्क्रिय देखकर दुर्योधन गरजा- क्या तूंने सुना नहीं। अब एक क्षण की भी प्रतीक्षा मेरे लिये असह्य है। यदि तूने जरा भी देरी की तो तेरा शिरच्छेद हो जायेगा।

डरता-कांपता दु:शासन पाँवों को घसीटता हुआ द्रौपदी की ओर बढ़ने लगा कि सुनायी दिया- दु:शासन! दुर्योधन तो कामांध हो गया है पर क्या तुझे भी कुल की मर्यादा का बोध नहीं रहा? तूं तो समझ, अन्यथा शील की अग्नि में तूं खत्म हो जायेगा।

एक तरफ कुआँ, एक तरफ खायी। दु:शासन के बढ़ते कदम एकदम जमीन से चिपक गये।

अरे! वहाँ खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है? अब तनिक भी विलम्ब किया तो मुझसे बुरा दूसरा नहीं होगा। दुर्योधन झल्लाता हुआ बोला।

द्रौपदी बुलन्द स्वर में मुखर हुई-अरे सभा में उपस्थित पूजनीय कुलवृद्धों ! आपकी आँखों के सामने इस प्रकार का घिनौना कृत्य हो रहा है और आप हाथ पर हाथ धरकर बैठे हो । मुझे तो समझ में ही नहीं आ रहा कि आप अपनी कुलवधू के साथ होते अत्याचार को देखकर भी कैसे चुप्पी साध बैठे हैं?

सन्नाटा! घोर सन्नाटा ! कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। सभी की आँखें शर्म से झुक गयी।

सर्वथा नि:स्पृह प्रतिक्रिया देखकर द्रौपदी

पाण्डुपुत्रोन्मुख होकर गरज उठी- अरे पाण्डुपुत्रों! आपके समक्ष आपकी प्रिया की इज्जत लूटी जा रही है, तब भी आप प्रतिमावत् अक्रिय होकर बैठे हैं। आपने मुझे हारा तो क्या हुआ, अमर्यादा और अनुशासनहीनता की भी कोई सीमा होती है। क्या आपका क्षात्रधर्म मेरी सुरक्षा के लिये आपको प्रेरित नहीं करता। आओ और अपने क्षात्रधर्म को निभाओ।

द्रौपदी का हार्दिक निवेदन सुनकर भीम, अर्जुन आदि की भुजाएँ फड़क उठी तो पर संसद में उपस्थित कुलवृद्धों का रसहीन रवैया देखकर हस्तक्षेप करना उचित नहीं लगा।

दोनों ओर से निराश द्रौपदी स्वगत कह उठी- ओह! कैसी यह दीन-स्थिति! रक्षक ही भक्षक बन गया है, बुजुर्ग सर्वथा अनासक्त हैं, पतिदेव मजबूरी के बोझ तले दबे हुए हैं, तब मेरे जीवन का क्या अर्थ रहा! वास्तव में यह संसार कितना सारहीन और स्वार्थी है। यहाँ जब मानवता और शील को नग्न किया जा रहा है, तब क्षात्रधर्म का यूं टुकुर टुकुर ताकना कहाँ का न्याय है?लगता है सतयुग में ही कलियुग आ गया है।

तभी द्रौपदी के चिन्तन का पहिया घूमा- अरे! मैं यह क्या सोचने लगी। ये सारा खेल कर्म-सत्ता का है। उसके सम्मुख तीर्थंकर और चक्रवर्ती भी हार जाते हैं, फिर मेरी तो बिसात ही क्या है! इसमें कूसुर न पाण्डुपुत्रों का है न दुर्योधन-दु:शासन का है। वे सब तो निमित्त मात्र हैं।

बस! मुझे मेरा संकल्प नहीं हारना है। यदि मुझे शील की शक्ति पर श्रद्धा है तो दुर्योधन और दु:शासन तो क्या, विश्व की बड़ी से बड़ी कोई भी शक्ति मेरा बाल बांका नहीं कर सकती। श्रद्धा के तारों पर शील का संगीत छेड़ती हुई द्रौपदी आत्मलीन हो गयी। बाहर का सम्पर्क टूटा कि भीतर में एक प्रकाश हुआ। एक अपूर्व वर्तुल बना। शील के शैल से टकराकर हजारों-लाखों वज्र भी बेकार हो गये। उसकी आन्तरिक शील-निष्ठा ने निश्चय ही सुरेन्द्रों को प्रभावित किया।

दु:शासन चीर को खींचते-खींचते थक गया। फिर भी जब उसका किनारा हासिल नहीं हुआ तो उसकी सांस फूलने लगी।

दुर्योधन की चिरप्रतीक्षित चाह अभी भी अधूरी थी। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि मेरी मनोकामना में यह विलम्ब क्यों हो रहा जबकि वस्त्र का ढ़ेर लग चुका है।

दु:शासन अत्यधिक थक चुका था। हजार पुरुषार्थ साधने पर भी चीर के अन्तिम छोर को पा लेने की संभावना नजर नहीं आ रही थी तथापि दुर्योधन की आज्ञा के विरुद्ध जाकर वह उनकी नाराजगी मोल नहीं लेना चाहता था।

वह काफी समय तक योंहि चीर को खींचता रहा और चीर रबड़ की तरह फैलता रहा। तनिक मायूस होकर वह बोला- राजन् ! क्या करूँ? इसके चीर का अन्तिम छौर नजर ही नहीं आ रहा। यह कोई देव माया है या इन्द्रजाल?

दुर्योधन विस्मित तो था ही पर उन्माद अभी भी कम नहीं हुआ था। दु:शासन ! घबराने की कोई जरूरत नहीं है। आज मैं अपने मन....वह आगे कुछ बोलता, इतने में धृतराष्ट्र की ध्वनि कर्णपटल से टकरायी। अरे निर्लज्जों! अपना ये घिनौना तमाशा बंद करो। बहुत कर ली अपनी मनमानी। तुम्हें न तो अपनी कुल-मर्यादा का बोध है, न अपयश की चिन्ता। तुम कितना ही यत्न क्यों न कर लो, महासती के सतीत्व के सत्त्व की थाह नहीं पा सकोगे।

इधर द्रौपदी अभी भी परम शान्त, स्थिर और ध्यानस्थ थी। बाहर की प्रवृत्तियों से उसे कोई सरोकार नहीं था। उसके मुख पर दपदपा रहा शील का तेज हर किसी को मंत्रमुग्ध और पराभूत करने वाला था।

सतीत्व का विशेषण सुनकर दुर्योधन झल्ला उठा। तात् ! लगता है साठ वर्ष की उम्र में आपकी बुद्धि भी सठिया गयी है अन्यथा पांच पतियों के साथ भोग भोगने वाली स्त्री को सती कभी नहीं कहते।

द्रौपदी के शील का बखान करते हुए धृतराष्ट्र बोले- विकारों के जंगल में भ्रमण करने वाली तेरी दुर्बुद्धि में गुणों का उपवन कहाँ से खिलेगा। अरे! द्रौपदी भले ही पाँच पतियों की पत्नी है तथापि जिस दिन जिसके साथ पत्नी के रूप में प्रस्तुत होती है, उस दिन शेष चारों पतियों को देवर और ज्येष्ठ के रूप में मानती है। (क्रमश:)

गुरु स्मृति
67

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

उस समय भी भद्रावती तीर्थ की रमणीयता अद्‌भुत थी। तब जीर्णोद्धार हुआ न था। पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने मार्गदर्शन में जिन चित्रों का निर्माण चन्द्रपुर में करवाया था, उनकी पूर्णाहुति भद्रावती तीर्थ में ही हुई थी। बाद में जब उन चित्रों वाली पुस्तक का प्रकाशन हुआ तो उसमें पहला चित्र भद्रावती तीर्थ का ही था। इस चित्र के प्रकाशन से भद्रावती तीर्थ और उसके मूलनायक केसरिया पार्श्वनाथ परमात्मा के प्रति पूज्यश्री की अटूट श्रद्धा को स्वर मिला था।

यह अद्‌भुत संयोग था कि उपधान तप के उस दिव्य वातावरण में तपागच्छीय मुनिराजों का भी आगमन हुआ था। पूज्यश्री के प्रेम के वशीभूत वे पूज्य मुनि श्री अनंतविजयजी म. न केवल वहाँ उपधान की पूर्णता तक रुके। बल्कि अपनी चल रही तपस्या को आगे बढाते हुए उपधान की माला तक लगातार उपवास किये। उन्होंने 67 उपवास की घोर तपस्या की थी। पूज्यश्री ने उनके तपभावों की अनुमोदना करते हुए अभिनंदन किया। उपधान के पारणे के साथ उनका भी पारणा संपन्न हुआ।

भद्रावती के कार्यक्रम की पूर्णता के पश्चात् पूज्यश्री ने आंध्रप्रदेश की ओर विहार किया। हैदराबाद प्रवास हो चुका था। अतः उन्होंने विहार हेतु नये मार्ग का चुनाव किया। पूज्यश्री करीमनगर, सूर्यापेट होते हुए विजयवाडा पधारे।

विजयवाडा का श्रीसंघ तब एक ही था। मारवाडी परिवार बडी संख्या में थे। कोई गच्छवाद नहीं था। खरतरगच्छ, तपागच्छ, तीन थुई आदि कई संप्रदायों के अनुयायी वहाँ निवास करते थे। पर श्री संघ अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार एक साथ आराधना करता था।

पूज्यश्री के प्रवचन बहुत ही क्रान्तिकारी थे। जैन समाज को संगठित होकर कैसे जीना चाहिये, यह विषय मुख्य होता था। साथ ही आम जनता के लिये उपयोगी होते थे। इसलिये जैन समाज के अलावा अन्य समाज के लोग बडी संख्या में पूज्यश्री के प्रवचनों का अमृत पान करने के लिये उपस्थित रहते थे।

विजयवाडा संघ की विनंती से 10 से 15 दिन का प्रवास वहाँ रहा। प्रवचन सार्वजनिक होते थे। आम जनता भी पूज्यश्री के वचनों का लाभ उठा सके, इस कारण दुभाषिये की व्यवस्था की गई थी। पूज्यश्री हिन्दी में प्रवचन फरमाते, वह दुभाषिया तेलुगु में अनुवादित कर सुनाता। सन् 1951 का परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक वहीं मनाया गया। समारोह गांधी पार्क में रखा गया था। समारोह की अध्यक्षता विजयवाडा म्युनिसिपल के चेयरमेन श्री गणपतिराव ने की थी। जिन्होंने पूज्यश्री के प्रवचन को तेलुगु में सुनाया था, उनका नाम था श्री वेमुरी राधाकृष्णनमूर्ति!

विजयवाडा के पास ही है गुण्टुर! गुण्टुर का श्री संघ पूज्यश्री की सेवा में था। चातुर्मास कराने हेतु विनंती लेकर पहुँचा। विजयवाडा, राजमहेन्द्री संघ का भी आग्रह चल रहा था। गुंटुर वालों का आग्रह निरन्तर जारी था।

पूज्यश्री ने देश-काल आदि के आधार पर आगार रखते हुए गुंटुर चातुर्मास हेतु स्वीकृति प्रदान की। पर चातुर्मास प्रारंभ होने में अभी समय था। इसलिये पूज्यश्री ने एलुरु, राजमहेन्द्री, गुडीवाडा तीर्थ की स्पर्शना का निश्चय किया।

क्रमशः

गोत्र का इतिहास
18

चोरडिया/गोलेच्छा/गोलछा/पारख/ रामपुरिया/गधैया आदि गोत्रों का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इन गोत्रों की उत्पत्ति चंदेरी नगर में हुई। विक्रम संवत् 1192 की यह घटना है। पूर्व देश में स्थित चंदेरी नगर पर राठोड वंश के खरहत्थ राजा का शासन था। उसके चार पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः अम्बदेव, निम्बदेव, भैंसाशाह और आसपाल थे।

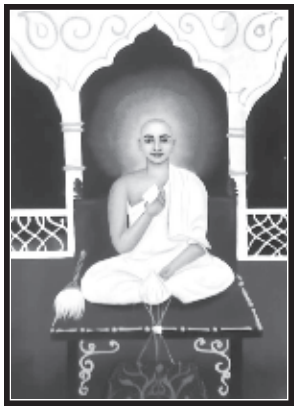

एक बार यवन सेना ने राज्य पर आक्रमण कर दिया। जनता को लूंटना प्रारंभ किया। राजा खरहत्थ अपने चारों युवा पुत्रों के साथ सेना लेकर रणभूमि में कूद पडा। यवन सेना का पीछा किया। घमासान युद्ध हुआ। राजा खरहत्थ, उनके पुत्रों व सेना ने बहादुरी के साथ युद्ध लडा। परिणाम स्वरूप ज्योंहि यवन सेना को हारने का अनुमान लगा तो वह सेना लूटा हुआ सारा धन वहीं छोड कर भाग गई।

राजा खरहत्थ ने सारा धन उनके मालिकों को लौटा दिया। इस युद्ध में राजा खरहत्थ की विजय हुई। पर उसके चारों पुत्र बहुत घायल हो गये। राजवैद्यों ने चिकित्सा की। पर वे स्वस्थ नहीं हो पाये। उनकी स्थिति लगातार बिगडती गई। राज वैद्यों ने अपने हाथ खडे कर दिये। उन्होंने कहा- आपके चारों पुत्रों को कोई चमत्कार ही बचा सकता है।

यह सुन कर राजा खरहत्थ घबरा उठा। वह रूदन करने लगा। तभी उसे समाचार मिले कि इधर कोई जैन साधु आये हुए हैं।

पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि प्रथम दादा गुरुदेव खरतरगच्छाचार्य श्री जिनदत्तसूरि का नगर में आगमन हुआ है। राजा के मंत्रियों ने पूरे समाचार सुनाकर कहा- ये जैनाचार्य बडे त्यागी व तपस्वी हैं। उनकी शरण स्वीकार करने से ही पुत्रों को स्वस्थता मिल सकती है। ये बडे चमत्कारी आचार्य हैं।

राजा गद्‌गद् होता हुआ अपने मरणासन्न चारों पुत्रों को लेकर आचार्य भगवंत के पास पहुँचा। गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी प्रार्थना प्रस्तुत की। गुरुदेव ने उन पुत्रों पर अभिमंत्रित अमृत-जल का छिडकाव किया। पुत्रों के स्वास्थ्य में थोडा सुधार आने लगा। राजा की आंखों में प्रसन्नता छा गई। प्रतिदिन यह प्रयोग किया गया। कुछ ही दिनों में चारों ही भाई पूर्ण स्वस्थ हो गये।

राजा खरहत्थ सपरिवार गुरुदेव का परम भक्त बन गया। गुरुदेव की देशना श्रवण करने के लिये प्रतिदिन उपाश्रय जाने लगा। गुरुदेव ने जिनधर्म का रहस्य समझाते हुए अहिंसा का उपदेश दिया। गुरुदेव के उपदेशों से प्रभावित होकर उसने जैन धर्म को स्वीकार कर लिया। उनके साथ उनके पूरे परिवार ने तथा अनेक क्षत्रियों ने वीतराग परमात्मा के धर्म को अपना लिया।

चोरडिया- इस गोत्र के नामकरण के पीछे दो कथाऐं इतिहास में प्राप्त होती है। एक मत के अनुसार दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि से चोरडिया नामक गांव में धर्म प्राप्त करने के कारण उनका चोरडिया गोत्र प्रसिद्ध हुआ। यह गांव आज भी जोधपुर-जैसलमेर मुख्य मार्ग पर शेरगढ तहसील में स्थित है।

दूसरे मत के अनुसार राजा खरहत्थ के पुत्र अम्बदेव ने एक बार चोरों का पीछा किया था। उन्हें पकड कर उनके पॉचों में बेडियॉ डाल दी थी। चोरों से भिडने के कारण चोरभेडिया कहलाये। अथवा चोरों के पॉवों में बेडियॉ डालने के कारण चोरवेडिया कहलाए। बाद में अपभ्रंश होकर चोरडिया गोत्र प्रसिद्ध हुआ।

सावनसुखा- राजा खरहत्थ के पुत्र भैंसाशाह के पॉच पुत्र थे। सबसे बडे पुत्र का नाम कुंवरजी था। उसे बचपन से ही ज्योतिष, शकुनशास्त्र आदि परा विद्या का अभ्यास किया था। इस कारण उसके द्वारा की गई भविष्यवाणियॉ प्रायः सच साबित होती थी।

एक बार चित्तौड के राजा ने वर्षा के संबंध में प्रश्न किये। उसने भविष्यवाणी की कि सावन सूखा रहेगा और भादवा हरा होगा।

वैसा ही हुआ। उसकी भविष्यवाणी सच हुई। यह देख राणा ने कुंवरजी के ज्ञान की बहुत प्रशंसा की। राजसभा में कहा- कुंवरजी ने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ। सावन सूखा

ही गया। यह बात पूरे राज्य में फैल गई। लोग उन्हें देख कर चर्चा करते कि ये वहीं सावन सूखे वाले कुंवरजी हैं। धीरे धीरे वे और उनका परिवार सावनसूखा कहलाने लगे। 19वीं शताब्दी में हुए आचार्य जिनमहेन्द्रसूरि सावनसुखा गोत्र के थे। सेठ मोतीशा द्वारा निर्मित भायखला जिनमंदिर एवं श्री सिद्धाचल की मोतीशा टूंक की प्रतिष्ठा इन्हीं के करकमलों से संपन्न हुई थी।

गोलेच्छा– राजा खरहत्थ के पुत्र भैंसाशाह के दूसरे पुत्र गेलोजी थे और उनके पुत्र का नाम बच्छराज था। लोग बच्छराजजी के लिये कहते थे कि ये गेलोजी के बच्छजी हैं। धीरे धीरे उनका नाम गेलवच्छा हो गया। यही गेलवच्छा अपभ्रंश होकर गोलेच्छा या गोलच्छा में बदल गया। इस प्रकार बच्छराजजी के वंशज गोलेच्छा कहलाये।

सेठ माणकचंदजी गोलेच्छा जयपुर राज्य के प्रधान रहे। नथमलजी गोलेच्छा वि. 1937 से वि. 1958 तक जयपुर राज्य के मंत्री व दीवान रहे।

पारख/पारेख/परीख– राजा खरहत्थ के पुत्र भैंसाशाह के चौथे पुत्र का नाम पाशु था। ये बडे जौहरी थे। रत्नों की परीक्षा करने में माहिर थे। आहड नरेश चन्द्रसेन ने पाशुजी की योग्यता देख कर उन्हें अपने दरबार में स्थान दिया। एक बार एक बडा जौहरी अन्य देश से एक नायाब हीरा बेचने के लिये आहड दरबार में आया। राजा ने उस हीरे की परीक्षा करने के लिये नगर के जौहरियों को कहा। जौहरियों ने हीरा देख कर कहा– यह हीरा असली है। बहुत कीमती है।

बाद में वही हीरा पाशुजी को दिखाया। उन्होंने हीरे की परीक्षा करते हुए कहा– हीरा निश्चित ही बहुत कीमती है। पर इस हीरे में एक दोष भी है। यह हीरा जिस घर में रहेगा, उस घर की महिलाओं के लिये अमंगलकारी होगा।

राजा ने हीरे के मालिक जौहरी से पूछा तो उसने कहा पाशुजी की बात सही है।

मेरे पास यह हीरा आते ही मेरी दोनों पत्नियों का स्वर्गवास हो गया। आगन्तुक जौहरी बोला– हमने बहुत जौहरी देखें पर पाशुजी की बात अलग ही है।

राजा चन्द्रसेन ने प्रमुदित होकर पाशुजी की परीक्षा से प्रमुदित होकर पारखी की पदवी दी। वही पदवी आगे चलकर पारख के रूप में बदल गई। पाशुजी के वंशज पारख कहलाये।

आचार्य जिनसमुद्रसूरि, जिनसुन्दरसूरि, पूज्य गणाधीश श्री त्रैलोक्यसागरजी म. पारख गोत्र के अनमोल रत्न थे। पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य तपस्वी मुनि हरखसागरजी म. पारख गोत्र के थे। प्रवर्तिनी श्री पुण्यश्रीजी म. प्रवर्तिनी श्री वल्लभश्रीजी म. भी पारख गोत्र के थे। वर्तमान में हमारे समुदाय में आचार्य जिनपीयूषसागरसूरिजी, मुनि मौनप्रभसागरजी, मुनि मननप्रभसागर, साध्वी प्रियंकराश्रीजी, साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी, साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी आदि कई साधु साध्वी पारख गोत्र के हैं।

गद्दहिया/गधैया/गादिया– दादा गुरुदेव से जैनधर्म प्राप्त राजा खरहत्थ के पुत्र भैंसाशाह के पांचवें पुत्र का नाम सेनहत्थ था। पर उसका भरा भरा शरीर होने के कारण परिवारजन उसे प्रेम से गद्दाशाह कहकर बुलाते थे। आगे चलकर उनके वंशज गधैया कहलाये। अपभ्रंश होकर यही गोत्र गादिया के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

भटनेरा चौधरी– राजा खरहत्थ के दूसरे पुत्र का नाम निम्बदेव था। वह न्याय करने के लिये प्रसिद्ध था। गांव में किसी भी प्रकार का विवाद होने पर लोग उनके पास आकर न्याय कराते थे। वह निष्पक्ष दृष्टि से न्याय करता था। न्याय करने के कारण वह चौधरी कहलाया। भटनेर नगर का वासी होने के कारण उसके वंशज भटनेरा चौधरी कहलाये।

रामपुरिया– चोरडिया गोत्र के आलमचंदजी से रामपुरिया गोत्र की प्रसिद्धि हुई। रामपुरा के चंद्रावतों की कन्या का विवाह बीकानेर के महाराजा के साथ हुआ उस समय रामपुरा के राजा ने अपनी पुत्री के साथ चोरडिया आलमचंदजी को कामदार बनाकर भेजा। चूंकि आलमचंदजी रामपुरा से आये थे, अतः उनके वंशज रामपुरिया कहलाये। मूल गोत्र चोरडिया है।

गूगलिया– सावनसुखा कहलाये कुंवरजी के वंशजों ने बाद में जैसलमेर में गूगल का व्यापार करना प्रारंभ किया। गूगल का व्यापार करने के कारण वे गूगलिया कहलाये।

सावनसुखा, गोलेच्छा, पारख, भटनेरा चौधरी, गद्दहिया, गूगलिया, सोनी, पिपलीया, फलोदिया, नाणी, धन्नाणी, तेजाणी, जसाणी, पोपाणी, कक्कड, मक्कड, सीपाणी, मोलानी, देवसयाणी, चगलानी, सद्दाणी, लूटकण, कोबेरा, मट्टारकिया, बूचा, फाकरिया, फाफरिया, घंटेलिया, कोकडा, साहिला, संचोपा, कुरकच्चिया, ओस्तवाल, गुलगुलिया, रामपुरिया, सिंघड, कुमटिया आदि 50 शाखाऐं राजा खरहत्थ के वंशजों की हुई। दादा जिनदत्तसूरि से प्रतिबोध प्राप्त कर ये जैन बने। इनका आपस में भाईपा है।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

खरतरगच्छीय श्रावकों का शासन-प्रेम

—महोपाध्याय विनयसागरजी

भगवान महावीर के धर्मशासन की यह प्रमुख विशेषता रही है कि उनके स्वहस्त दीक्षित साधु-साध्वियों से दसगुणा अधिक श्रावक-श्राविकाओं की परिगणना रही है। यह संख्या व्रतधारियों की ही है। भगवान के प्रति श्रद्धा-भक्ति रखने वालों की संख्या कहीं अधिक है। जैन धर्म के व्रतों का पालन सूक्ष्मता और कठोरता को लेकर समाज में कुछ कमी आने लगी थी। बदलते समय को देखकर आचार्यों ने भी द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को ध्यान में रखकर चारों वर्णों के लोगों को प्रतिबोध देना प्रारम्भ किया। सप्त व्यसन मुक्त समाज की रचना पर उन्होंने प्रमुखता से ध्यान दिया। उपदेश में भी यही प्रवृत्ति रही। उन श्रमणों/आचार्यों के उपदेश से प्रभावित होकर, प्रतिबोध प्राप्त कर निर्व्यसनी होकर लाखों व्यक्ति नये जैन बनने लगे। पूर्वाचार्यों ने जिस ओसवाल वंश और गोत्रों की स्थापना की थी उसको समृद्धि प्रदान करते हुए खरतरगच्छ के आचार्यों ने भी अनुपमेय योगदान दिया। जिनवल्लभसूरि, जिनदत्तसूरि, जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, उपाध्याय क्षेमकीर्ति और युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ने इस क्षेत्र में/जैनीकरण के क्षेत्र में अपने तप-तेज को झोंक दिया। उक्त आचार्यों ने लाखों की संख्या में व्यसन मुक्त जीवन जीने वाले नये-नये उपासक बनाकर ओसवास जाति को अत्यन्त समृद्धि प्रदान की और पृथक्-पृथक् गोत्रों में उनको व्यवस्थित किया। महत्तियाण जाति की तो प्रसिद्धि ही मणिधारी जिनचन्द्रसूरि से हुई। खरतरगच्छीय गोत्रों में ओसवास वंश के ८४, श्रीमाल वंश के ७९ एवं पोरवाड़ और महत्तियाण जाति के १६६ गोत्र खरतरगच्छीय मान्यताओं को स्वीकार कर अनुयायी बने।

यहाँ जाति और गौत्रों की उत्पत्ति पर विचार करना अभीष्ट नहीं है किन्तु इस श्राद्ध वर्ग के द्वारा जो-जो विशिष्ट कार्य सम्पन्न हुए हैं उनका संक्षिप्त उल्लेख करना ही अभीष्ट है।

खरतरगच्छ के उद्भावक और आचार्य जिनेश्वर और आचार्य बुद्धिसागर जन्मजात जैन नहीं थे किन्तु धारा नगरी के जैन धर्मावलम्बी सेठ लक्ष्मीपति के सान्निध्य से दोनों भाई वर्द्धमानसूरि के शिष्य बने ।

जिनवल्लभसूरि रचित अष्टसप्तति के अनुसार चित्तोड़ के प्रमुख श्रेष्ठ अम्बड़, केहिल, वर्द्धमान, सोमिलक, वीरदेव, माणिक्य, सुमति, क्षेमसरीय, रासल्ल, धनदेव, वीरम, मानदेव, पद्मप्रभ, पल्लक, साधारण और सङ्कक इत्यादि के नाम प्राप्त होते है जो कि जिनवल्लभसूरि के असाधारण भक्त थे। नागपुर के धनदेव पुत्र पद्मानन्द आदि परिवार के साथ इन्हीं आचार्य का भक्त था। इन्हीं आचार्य द्वारा रचित **द्वादशकुलक** को आधार बनाकर श्रावक गणदेव ने वागड़ देश में लाखों खरतरगच्छ के अनुयायी बनाये।

जिनदत्तसूरि ने १,३०,००० नये जैन बनाकर, नये गोत्रों में सम्मिलित कर उपदेश का एक नया स्रोत बहाया था।

मणिधारी जिनचन्द्रसूरि ने महत्तियाण जाति और उनके गोत्रों की स्थापना कर नया कीर्तिमान स्थापित किया था। महत्तियाण जाति और श्रीमाल आज भी खरतरगच्छ की आणा को स्वीकार करते हैं।

जिनपतिसूरि के समय में महाराजा पृथ्वीराज चौहान की राजसभा में सेठ रामदेव जो कि महाराजा पृथ्वीराज और मन्त्री कैमास का अत्यन्त प्रिय था, वह आचार्यश्री का भक्त था और आचार्यश्री का सम्बन्धि भी था। सेठ क्षेमन्धर जिनका की पुत्र प्रद्युम्नाचार्य चैत्यवासी आचार्यों का सिरमोर था, वह भी आचार्यश्री का भक्त था। माण्डव्यपुर का सेठ लक्ष्मीधर, नेमिचन्द भाण्डागारिक, बृहद्वार का आसराज राणक, ठाकुर विजयसिंह, सेठ स्थिरदेव आदि जिनपतिसूरि के प्रमुख भक्त थे।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

जिनेश्वरसूरि के प्रमुख भक्त थे- जाबालीपुर के सेठ यशोधवल, श्रीमालनगर के सेठ जगधर, पालनपुर के सेठ भुवनपाल, ठाकुर अश्वराज, सेठ राल्हा, महं. कुलधर, सेठ धीधाक, क्षेमसिंह, बाड़मेर के सहजाराम के पुत्र बच्छड़, मोल्हाक, कुमारपाल, सेठ भुवन, सेठ हरिपाल, सेठ मूलदेव, सेठ सावदेव, पूर्णसिंह, बोधा, धारसिंह, धान्धल, आसनाग, भोजाक, सेठ नेमिकुमार, सेठ गणदेव, आदि। अभयचन्द्र, देदाक, श्रीपति, मूलिक, पेथड़, देदा आदि ने जिनेश्वरसूरि की अध्यक्षता में शत्रुंजय का संघ निकाला था। इस संघ में कई प्रमुख श्रेष्ठि लोग थे। आचार्य के उपदेश से सेठ क्षेमसिंह, महं. पूर्णसिंह और महं. ब्रह्मदेव ने अनेक बिम्ब भरवाये थे।

जिनप्रबोधसूरि के प्रमुख भक्तों में सेठ क्षेमसिंह, दिल्ली निवासी दलिक हरू, सेठ हरिचन्द, चाहड़, हेमचन्द्र, हरिपाल, पूर्णपाल, भीमसिंह, मन्त्री महणसिंह, आदि ने मिलकर शत्रुंजय महातीर्थ का यात्री संघ निकाला था और अनेक श्रेष्ठियों ने मूर्ति स्थापन का सौभाग्य भी प्राप्त किया था। बीजापुर के सेठ मोहन, सेठ आसपाल, मन्त्री विन्ध्यादित्य, ठाकुर उदयदेव, भाण्डागारिक लक्ष्मीधर आदि ने आचार्य का बीजापुर में प्रवेशोत्सव किया था। वि.सं. १३३९ में जाबालीपुर का प्रवेशोत्सव मन्त्री पूर्णसिंह, भण्डारी राजा, जिसड़, देवीसिंह, मोहा आदि ने किया था।

कलिकाल केवली जिनचन्द्रसूरि के समय सेठ क्षेमसिंह, महामन्त्री देदा, भण्डारी छाहड़ ने इनके उपदेश से जिनबिंब भरवाए थे। सेठ बाहड़, भाण्डागारिक भीम, जगसिंह और खेतसिंह ने महाराजा सोमेश्वर चौहान के सान्निध्य में आचार्य का गढ़सिवाना में और सेठ लखमसिंह, आसपाल ने बीजापुर में प्रवेशोत्सव कराया था। संघपति अभयचन्द्र सेठ, वरडिया नगर के मुख्य श्रावक नौलखा झांझड़ को दीक्षा दी थी। वि.सं. १३५२ में बड़गाँव के चाहड़, ठक्कुर हेमराज, मूलदेव आदि ने पूर्वदेश की यात्रा की थी। सेठ सलखण, सेठ सीहा, माण्डव्यपुर वासी सेठ मोहन आदि ने आबू तीर्थयात्रा के लिए विशाल संघ निकाला था। वि.सं. १३६४ में मन्त्री भुवनसिंह, सुभट, नयनसिंह, दुस्साज और भोजराज ने जाबालीपुर में महोत्सव किया था। सेठ जेसल ने अपने भाई तोला और लाखू के साथ शत्रुंजय का यात्री संघ निकाला था। वि.सं. १३६७ में सेठ क्षेमन्धर, पद्मा, साढल, धनपाल, सेठ सामल आदि ने भीमपल्ली से विशाल यात्री संघ निकाला था। संवत् १३७१ में मन्त्री भोजराज और देवसिंह ने मालारोपण आदि महोत्सव किया था। सेठ मानल के पुत्रों ने अपने परिवार सहित फलवर्द्धि का संघ निकाला था। उच्चापुरीय विधि संघ के प्रमुख सेठ लोहदेव, सा. लखण, सा. हरिपाल आदि की प्रार्थना से आचार्यश्री सिन्ध में पधारे थे। राजेन्द्रचन्द्राचार्य के पदस्थापन महोत्सव पर सेठ वैरसिंह ने बड़ा उत्सव किया था। कन्यानयन निवासी काला सुश्रावक संघ सहित फलवर्द्धि पार्श्वनाथ की यात्रा की थी। वि.सं. १३७५ में मन्त्रीदलीय ठाकुर विजयसिंह, ठाकुर सेढु, ठाकुर सा. रुदा, और दिल्ली संघ के प्रमुख मन्त्रीदलीय ठक्कुर अचलसिंह ने कुशलकीर्तिगणि के वाचनाचार्य पद का बड़ा महोत्सव किया था। वि.सं. १३७५ में ठक्कुर अचलसिंह ने निर्विरोध यात्रा के लिए कुतुबुद्दीन सुलतान से फरमान लेकर विशाल यात्री संघ निकाला था। इस संघ में सेठ सुरराज, रुद्रपाल आदि प्रमुख थे। इस संघ के प्रमुख-प्रमुख श्रेष्ठियों के नाम 'खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास' पृष्ठ १६२ पर देखें।

युगप्रधान जिनकुशलसूरि के आचार्य पदोत्सव कार्य वि. सं. १३७७ में सेठ जाल्हण के पुत्र तेजपाल और रुद्रपाल ने किया था। इस महोत्सव में भीमपल्ली के वीरदेव श्रावक, सेठ राजसिंह, राजमान्य ठक्कुर विजयसिंह, ठक्कुर जैत्रसिंह, ठक्कुर कुमरसिंह, ठक्कुर जवनपाल, जाबालीपुर के सा. गुणधर, पाटण के सा. तिहुण, बीजापुर के ठाकुर पद्मसिंह आदि भी सम्मिलित थे। वि. सं. १३८९ में पाटण में सेठ खीवड़ के प्रयत्न से सेठ तेजपाल आदि ने शत्रुंजय तीर्थ का

संघ निकाला। इस संघ में प्रमुख-प्रमुख थे- भीमपल्ली के सेठ वीरदेव, आशापल्ली के सेठ स्थिरचन्द, खेतसिंह आदि। संवत् १३८० में सेठ तेजपाल और रुद्रपाल की ओर से शत्रुंजय तीर्थ पर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा स्थापित की गई थी। संवत् १३८० में दिल्ली निवासी सेठ हरूजी के पुत्र सेठ रयपति ने बादशाह गयासुद्दीन तुगलक से निर्विघ्न यात्रा हेतु फरमान प्राप्त कर शत्रुंजय का महायात्री संघ निकाला था। इस महासंघ में अनेक संघों के संघपति सम्मिलित हुए थे जिनका उल्लेख खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास पृष्ठ १७२ से १८० तक पठनीय है। यह महासंघ जिनकुशलसूरि की सान्निध्य में ही निकला था। वि. सं. १३८१ में सेठ मालदेव, सा. हुलमसिंह सहित सेठ वीरदेव ने सम्राट गयासुद्दीन से फरमान प्राप्त कर भीमपल्ली से शत्रुंजय का यात्रा संघ निकाला था। इसी प्रकार संवत् १३८२ में सेठ वीरदेव ने भीमपल्ली में महान उत्सव किया था। वि. सं. १३८३ में सेठ प्रतापसिंह ने अमारी घोषणा पूर्वक नन्दी महोत्सव किया था। मन्त्री भोजराज, मन्त्री सलखणसिंह, उच्चापुर के सेठ हरिपाल, सेठ गोपाल, देवराजपुर के जाल्हण के पुत्र, सा. तेजपाल, सा. रुद्रपाल ने वि. सं. १३८३ में नन्दी महोत्सव किया था। संवत् १३८४ में सेठ नरपाल, सा. वयरसिंह, सा. नन्दण, सा. मोखदेव, सा. लाखण, सा. आम्बा आदि ने महामहोत्सव करवाए। बहरामपुर के सेठ भीमसिंह, सा. देदाजी, सा. घीराजी, सा. रूपाजी, क्यासपुर के सेठ मोहनजी, सा. कुमरसिंह आदि जिनकुशलसूरिजी के प्रमुख भक्त थे।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

जिनपद्मसूरि के उपासकों में सेठ हरिपाल, कटुक, कुलधर, झांझण, यशोधवल, कर्मसिंह, खेजसिंह। आदित्यपाट नगर के सेठ वीरदेव, पत्तन के नौलखा सेठ अमरसिंह, सेठ तेजपाल, बूजद्रि के सेठ मोखदेव, सेठ छज्जल, सेठ पूर्णसिंह, त्रिशृङ्गिम के मन्त्री मण्डलिक, मन्त्री वयरसिंह आदि प्रमुख भक्त थे।

जिनोदयसूरि के प्रमुख भक्तों में थे- संवत् १४१५ स्तम्भ तीर्थ के लूणिया जैसल, साधुराज रामदेव, नरसागरपुर के मन्त्रीश्वर वीरा, मन्त्री सारङ्ग, गेटा के पुत्र डूंगर, सा. कोचर, बाड़मेर के विक्रम पारख, राजपत्तन के कान्हड़, स्तम्भ तीर्थ के गोवल, देवपत्तनपुर के मन्त्री खेतसिंह।

जिनराजसूरि के प्रमुख भक्तों में- कडुआ, धरणा और नन्दा, केलवाड़ा के मन्त्रीपुत्र रामण कुमार। संवत् १४९४ चोपड़ा गोत्रीय सा. हेमराज, पूना, देहा, शिवराज, महिराज, लोला, लाखण, सोनगिरा, श्रीमाल वंशीय मन्त्री मण्डन और धनदराज, संघपति मण्डलिक थे।

जिनचन्द्रसूरि के समय संवत् १५१५ कुम्भदमेरु निवासी कुकड़ चोपड़ा गोत्रीय सा. समरसिंह। आचार्य जिनसमुद्रसूरि के- मण्डपदुर्ग निवासी और जेसलमेर के संघपति श्रीमालवंशीय सोनपाल। जिनहंससूरि के समय बोहित्थरा मन्त्री करमसी, आगरा के डूंगरसी, मेघराज, पोमदत्त। जिनमाणिक्यसूरि के समय पाटण निवासी बालाहिक गोत्रीय सा. देवराज आदि थे।

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के समय बीकानेर के मन्त्री संग्रामसिंह बच्छावत, मन्त्रीश्वर करमचन्द, रीणी के मन्त्रीश्वर रायसिंह, शंखवाल गोत्रीय साधुदेव आदि प्रमुख थे। जिनसिंहसूरि के समय टांक गोत्रीय श्रीमाल राजपाल, संघपति सोमजी, मेड़ता के आसकरण चोपड़ा आदि थे। जिनराजसूरि के भक्तों में प्रमुख थे- अहमदाबाद निवासी संघपति शिवाजी, सोमजी, रूपजी जिन्होंने सिद्धाचल तीर्थ पर खरतरवसही अर्थात् चौमुखजी की टूंक बनवाई और चोपड़ा गोत्रीय अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास, सूरदास आदि ने मेड़ता सिटी में शान्तिनाथ आदि सैंकड़ों बिम्ब भरवाए। जेसलमेर के भणसाली गोत्रीय सेठ थाहरु शाह ने लौद्रवा तीर्थ की प्रतिष्ठा करवाई। राजा गजसिंह, राजा सूरसिंह, असरफ खान, आलम दीवान, नवाब मुकरब खान आदि इनके बड़े प्रशंसक थे।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि के मुख्य भक्त थे- राजनगर निवासी नाहटा गोत्रीय जयमल्ल तेजसी, जोधपुर निवासी मनोहर दास। जिनसुखसूरि के- सूरत निवासी

पारख गोत्रीय सामीदास सूरदास। जिनचन्द्रसूरि (१९वीं) के- लखनऊ निवासी नाहटा गोत्रीय राजा वच्छराज। जिनहर्षसूरि के- जालोर के मन्त्री अक्षयराज, जांगलू के पारख अजयराज। जिनसौभाग्यसूरि के समय- दूगड़ प्रतापसिंह, संवत् १८९७ अजीमगंज के गोलेछा धरमचन्द, सेठिया पानाचन्द, सावणसुखा गुलाबचन्द, दुगड़ इन्द्रचन्द, सरदारशहर के बोथरा गुलाबचन्द, बीकानेर निवासी बागड़ी माणकचन्द आदि। जिनहंससूरि करवाए। बहरामपुर के सेठ भीमसिंह, सा. देदाजी, सा. घीराजी, सा. रूपाजी, क्यासपुर के सेठ मोहनजी, सा. कुमरसिंह आदि जिनकुशलसूरिजी के प्रमुख भक्त थे।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

जिनपद्मसूरि के उपासकों में सेठ हरिपाल, कटुक, कुलधर, झांझण, यशोधवल, कर्मसिंह, खेजसिंह। आदित्यपाट नगर के सेठ वीरदेव, पत्तन के नौलखा सेठ अमरसिंह, सेठ तेजपाल, बुजद्रि के सेठ मोखदेव, सेठ छज्जल, सेठ पूर्णसिंह, त्रिशृङ्गम के मन्त्री मण्डलिक, मन्त्री वयरसिंह आदि प्रमुख भक्त थे।

जिनोदयसूरि के प्रमुख भक्तों में थे। संवत् १४१५ स्तम्भ तीर्थ के लूणिया जैसल, साधुराज रामदेव, नरसागरपुर के मन्त्रीश्वर वीरा, मन्त्री सारङ्ग, गेटा के पुत्र डूंगर, सा. कोचर, बाड़मेर के विक्रम पारख, राजपत्तन के कान्हड़, स्तम्भ तीर्थ के गोवल, देवपत्तनपुर के मन्त्री खेतसिंह।

जिनराजसूरि के प्रमुख भक्तों में- कडुआ, धरणा और नन्दा, केलवाड़ा के मन्त्रीपुत्र रामण कुमार। संवत् १४९४ चोपड़ा गोत्रीय सा. हेमराज, पूना, देहा, शिवराज, महिराज, लोला, लाखण, सोनगिरा, श्रीमाल वंशीय मन्त्री मण्डन और धनदराज, संघपति मण्डलिक थे।

जिनचन्द्रसूरि के समय संवत् १५१५ कुम्भदमेरु निवासी कुकड़ चोपड़ा गोत्रीय सा. समरसिंह।

आचार्य जिनसमुद्रसूरि के- मण्डपदुर्ग निवासी और जेसलमेर के संघपति श्रीमालवंशीय सोनपाल। जिनहंससूरि के समय बोहित्थरा मन्त्री करमसी, आगरा के डूंगरसी, मेघराज, पोमदत्त। जिनमाणिक्यसूरि के समय पाटण निवासी बालाहिक गोत्रीय सा. देवराज आदि थे।

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के समय बीकानेर के मन्त्री संग्रामसिंह बच्छावत, मन्त्रीश्वर करमचन्द, रीणी के मन्त्रीश्वर राय सिंह, शंखवाल गोत्रीय साधुदेव आदि प्रमुख थे। जिनसिंहसूरि के समय टांक गोत्रीय श्रीमाल राजपाल, संघपति सोमजी, मेड़ता के आसकरण चोपड़ा आदि थे। जिनराजसूरि के भक्तों में प्रमुख थे- अहमदाबाद निवासी संघपति शिवाजी, सोमजी, रूपजी जिन्होंने सिद्धाचल तीर्थ पर खरतरवसही अर्थात् चौमुख जी की टूंक बनवाई और चोपड़ा गोत्रीय अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास, सूरदास आदि ने मेड़ता सिटी में शान्तिनाथ आदि सैंकड़ो बिम्ब भरवाए। जेसलमेर के भणसाली गोत्रीय सेठ थाहरु शाह ने लौद्रवा तीर्थ की प्रतिष्ठा करवाई। राजा गजसिंह, राजा सूरसिंह, असरफ खान, आलम दीवान, नवाब मुकरब खान आदि इनके बड़े प्रशंसक थे।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि के मुख्य भक्त थे- राजनगर निवासी नाहटा गोत्रीय जयमल्ल तेजसी, जोधपुर निवासी मनोहर दास। जिनसुखसूरि के- सूरत निवासी पारख गोत्रीय सामीदास सूरदास। जिनचन्द्रसूरि (१९वीं) के- लखनऊ निवासी नाहटा गोत्रीय राजा वच्छराज। जिनहर्षसूरि के- जालोर के मन्त्री अक्षयराज, जांगलू के पारख अजयराज। जिनसौभाग्यसूरि के समय- दूगड़ प्रतापसिंह, संवत् १८९७ अजीमगंज के गोलेछा धरमचन्द, सेठिया पानाचन्द, सावणसुखा गुलाबचन्द, दुगड़ इन्द्रचन्द, सरदारशहर के बोथरा गुलाबचन्द, बीकानेर निवासी बागड़ी माणकचन्द आदि। जिनहंससूरि के समय- बीकानेर के बच्छावत अमरचन्द, झालरा पाटण के भूरामल गोलेछा, नाहटा अमरचन्द, रायबहादुर दुगड़ गोत्रीय लक्ष्मीपतसिंह धनपतसिंह, अजीमगंज के नाहटा सिताबचन्द आदि।

('खरतरगच्छ साहित्य कोश' पुस्तक के प्राक्कथन से आंशिक संशोधन सह साभार)

जिज्ञासा

जिज्ञासा

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

प्रश्न– इस वर्ष आपका पत्र खरतरगच्छ के समस्त साधु साध्वियों के पास पहुँचा कि मूल बारसा सूत्र अर्थात् कल्पसूत्र का वांचन प्रथम प्रहर में पूर्ण हो जाना चाहिये। बहुत स्थानों पर आपकी इस आज्ञा का पालन हुआ, पर कहीं-कहीं पालन नहीं भी हुआ। उनका यह कहना रहा कि हम तो वर्षों से बाद में करते आ रहे हैं, यह नई बात कहाँ से आई! इसका क्या आगम प्रमाण है!

समाधान– आगम दो प्रकार के हैं। एक कालिक आगम, दूसरे उत्कालिक आगम! कालिक आगमों के लिये विधान है कि वे दिन के प्रथम तथा अन्तिम व रात्रि के प्रथम तथा अन्तिम, इस प्रकार चार प्रहरों में अस्वाध्याय घटिकाओं को छोड़ कर पढ़े जा सकते हैं। उत्कालिक आगमों के लिये काल का कोई नियम नहीं है। उनके लिये रात्रि की प्रथम व अन्तिम दो घटिकाओं तथा मध्याह्न व मध्यरात्रि की दो-दो घटिकाओं में पाठ करने का निषेध है।

कल्पसूत्र दशाश्रुत स्कंध नामक छेद सूत्र की आठवीं दशा का पाठ है। आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने दशाश्रुतस्कंध से पृथक् कर इसे कल्पसूत्र नाम दिया, इसीलिये यह आचार्य भद्रबाहु की रचना कही जाती है। दशाश्रुतस्कंध छेद सूत्र हैं। नंदी सूत्र में दशाश्रुत स्कंध को कालिक सूत्र कहा है। पाक्षिक सूत्र जो प्रति चतुर्दशी को पाक्षिक प्रतिक्रमण में साधु साध्वियों द्वारा बोला जाता है, उसमें कालिक सूत्रों के पाठ में उत्तराध्ययन सूत्र के बाद दशाश्रुत स्कंध की गणना की गई है।

कालिक सूत्र होने से इसका पाठ दिन व रात्रि के प्रथम तथा अंतिम प्रहर में ही हो सकता है। उसमें भी दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि द्वारा रचित संदेह दोलावली के प्रमाण के अनुसार रात्रि की प्रथम व अंतिम दो घडियों का त्याग किया जाता है।

नंदीसूत्र की टीका का पाठ इस प्रकार है-

आवश्यकव्यतिरिक्त द्विविधं प्रज्ञप्तम् तद्यथा- कालिकमुत्कालिकं च। तत्र यद् दिवसनिशाप्रथम-पश्चिमपौरुषीद्वय एव पठ्यते तत् कालिकम्। कालेन निर्वृत्तं कालिकमिति व्युत्पत्तेः। यत् पुनः कालवेलावर्जं पठ्यते तद् उत्कालिकम्।

आह च चूर्णिकृत्-

तत्थ कालियं जं दिण-राईण पढमचरमपोरिसीसु पढ़िज्जइ।
जं पुण कालवेलावज्जं पढिज्जइ तं उक्कालियं ति।।

-नंदी चू. सू. 80 पृष्ठ 57

अर्थ- आवश्यक व्यतिरिक्त आगम दो प्रकार के हैं- एक कालिक और दूसरा उत्कालिक! जिन आगमों का पाठ दिन व रात्रि की प्रथम तथा अंतिम पोरिसी अर्थात् प्रहर में किया जाता है, वे कालिक आगम कहलाते हैं। काल वेला को छोड़ कर अर्थात् किसी भी समय जिनका पाठ किया जा सकता है, वे उत्कालिक आगम कहलाते हैं।

इस पाठ से स्पष्ट है कि मूल कल्पसूत्र का पाठ दिन के प्रथम प्रहर में ही किया जाना चाहिये। बाद में यदि पाठ होता है, तो वह दोष का कारण है।

बिकमपुर में ध्वजारोहण महोत्सव

बिकमपुर 6 सितंबर। दूसरे दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्म स्थली बिकमपुर भगवान महावीरस्वामी जिनालय का द्वितीय वार्षिक ध्वजारोहण महोत्सव के उपलक्ष में पूजा, प्रसाद तथा मेले का आयोजन हुआ।

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी चेन्नई, श्रीसंघ व के.यु.प. बीकानेर की ओर से आयोजित महोत्सव में शामिल होने के लिए चेन्नई, कोलकाता, बीकानेर, फलोदी, चितलवाना सहित देश के विभिन्न स्थानों से श्रावक-श्राविकाएं बीकमपुर पहुंचे।

प्रेषक- हिमांशु सेठिया

श्री जैन शारदा–महालक्ष्मी पूजन
दीपावली पूजन–विधि एवं मुहूर्त्त

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।
2. पूजन के उपकरण–धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत–दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।
3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।
4. नई पेन/कलम लें।
5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।
7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।
8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।
9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।
10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।
11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अत: यह सर्वथा त्याज्य है।
12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम **ॐ अर्हम् नम:** लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक **श्री** से प्रारम्भ कर 9 **श्री** तक लिखें, इससे **श्री** का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में **शुभ लाभ** इस प्रकार लिखें –

।।ॐ अर्हम् नम:।।

श्री

शुभ श्री श्री लाभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :–

8	3	4
1	5	9
6	7	2

।।श्री महावीर स्वामिने नम:।।

।।श्री गुरू गौतम स्वामिने नम:।।

।।श्री जिनदत्त–चन्द्र–कुशल–चन्द्र गुरूभ्यो नम:।।

।।श्री सद्गुरूभ्यो नम:।।

।।श्री सरस्वत्यै नम:।।

श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो

श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो

श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो
श्री बाहुबली जी जैसा बल हो
श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो
श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो
श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो
श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो
श्री जिनशासन की प्रभावना हो।

श्री वीर सं. 2545 श्री विक्रम सं. 2076 मिति कार्तिक वदि 14 रविवार तारीख 27-10-2019 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा।
(पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

(तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...)

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,
हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
'मणिप्रभ' को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।

उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।

फिर इस अष्टक का पाठ करें -

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना घटि इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
संयम जीसको भी दिया, हुआ केवली सार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।
वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीँ क्लीं श्रीं ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार- भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।
3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार- भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
2. **गंध पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
3. **पुष्प पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।
4. **धूप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
5. **दीप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
6. **अक्षत पूजा**- ॐ आँ क्रौ ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
7. **नैवेद्य पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
8. **फल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।
9. **वस्त्र पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें-

नीर-गन्धाक्षतै पुंष्पै-नैंवेद्यैर्धूप-दीपकै:।
फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये।।

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्ति: शान्तिकर: स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व-लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।
जाति-चम्पकमालाद्यै - र्मोगरै: पारिजातकै:।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो,
पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम-छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।
पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दु:ख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।

।। ॐ श्रीं ह्रीँ क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नम: ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नम:**
   प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
2. **ॐ ह्रीँ श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नम:**
   दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
3. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नम:**
   तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
4. **ॐ ह्रीँ श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नम:**
   अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें। तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

दीपावली पूजन मुहूर्त्त

निशीथ वेला - शाम 6.08 से 7.48
वृषभ लग्न - शाम 7.16 से 9.16
सिंह लग्न - रात्रि 1.41 से 3.49

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 1

आसिफाबाद (तेलंगाना)

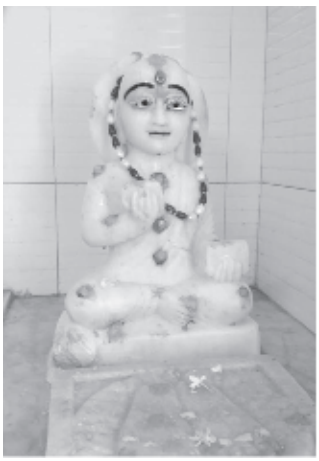

तेलंगाना के आदिलाबाद जिले में आसिफाबाद नामक छोटा कस्बा है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 23 से 24 हजार की कुल जन संख्या यहाँ की है। महाराष्ट्र से लगा यह सीमावर्ती कस्बा आस्था व धार्मिकता से परिपूर्ण है। यहाँ जैन समाज के कुल 23 घर हैं। सभी जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ परम्परा के अनुयायी हैं।

राजस्थान के आकर बसे यहाँ के निवासियों ने परमात्मा के नित्य दर्शन व पूजन हेतु श्री वासुपूज्य परमात्मा के गृह मंदिर का निर्माण किया। उसकी प्रतिष्ठा ता. 15 जनवरी 1995 को पूज्य मुनि श्री पद्मविजयजी म. के कर कमलों द्वारा संपन्न हुई।

इस गृह मंदिर में मूलनायक वासुपूज्य परमात्मा के साथ शान्तिनाथ परमात्मा, पार्श्वनाथ प्रभु, गणधर श्री गौतमस्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि, मणिभद्र देव एवं पद्मावती देवी की प्रतिमाऐं भी विराजित की गई। सभी की आस्था के केन्द्र दादा गुरुदेव के चरण भी बिराजमान किये गये।

विहार करते पधारे मुनि भगवंतों की प्रेरणा प्राप्त हुई कि गृह मंदिर के स्थान पर शिखरबद्ध जिन मंदिर का निर्माण किया जाये।

श्री संघ ने शिखरबद्ध जिन मंदिर के निर्माण का निर्णय लिया। एवं पूज्य मुनि श्री पीयूषसागरजी म. की निश्रा में ता. 6 जून 2013 को मंदिर निर्माण का मंगल प्रारंभ किया गया। सभी प्रतिमाओं का उत्थापन कर एक कक्ष में बिराजमान किया गया ताकि सभी श्रद्धालु परमात्मा की व गुरुदेव की भक्ति कर सके।

यहाँ का श्री संघ दादा गुरुदेव का पूर्ण रूप से अनुयायी हैं। प्रतिदिन बडी संख्या में श्रावक, श्राविकाऐं, बालक आदि परमात्मा एवं दादा गुरुदेव की पूजा सेवा करके अपना जीवन सफल बनाते हैं।

परमात्मा की सभी प्राचीन प्रतिमाऐं इस मंदिर में विराजमान की जायेगी।

जिन मंदिर के बायीं ओर एक गर्भ गृह का निर्माण होगा। जिसमें गणधर श्री गौतमस्वामी बिराजमान किये जायेंगे। तथा दायीं ओर बनने वाले दूसरे गर्भ गृह में दादा गुरुदेवश्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा एवं चरण बिराजमान किये जायेंगे।

वर्तमान में निर्माण-कार्य प्रारंभ है।

श्री वासुपूज्य जैन श्वेताम्बर मंदिर

पो. आसिफाबाद-504293, जिला- आदिलाबाद (तेलंगाना) मोबाईल- 87332 79206

केयुप-केएमपी का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन धुलिया 21-22 सितंबर की झलकियां

पूज्य गुरुदेवश्री मुनि मंडल के साथ

नवनिर्वाचित केएमपी के पदाधिकारी

पूज्यश्री के साथ केयुप की केन्द्रीय समिति

केयुप-केएमपी का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन धुलिया 21-22 सितंबर की झलकियां

संबोधन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

केयुप अधिवेशन में साध्वी मंडल

दीप प्रज्ज्वलन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, धुलिया संघ के पदाधिकारी एवं केयुप पदाधिकारी

केयुप गीत वंदना करते हुए

पद यात्रा संघ के फार्म का विमोचन

मुख्य अतिथि जीतो के अध्यक्ष श्री गणपतराजजी चौधरी का संबोधन

धुलिया श्री संघ का बहुमान केयुप द्वारा

अधिवेशन सहयोगी श्री विमलचंदजी खीमचंदजी पारलेचा, सेलंभा का बहुमान

अधिवेशन मुख्य सहयोगी श्री सुरेशजी मुथा का बहुमान

इचलकरंजी से संघ लेकर पधारे श्री ललवानीजी का बहुमान

केयुप शाखा धुलिया का बहुमान केयुप द्वारा

अतिथि विशेष सेटलमेंट कमिशन ऑफ इंकम टेक्स श्री के.एल. माहेश्वरी

महाराणा भूपाल कॉलेज पूर्व छात्र परिषद/एल्यूमिनी, उदयपुर (राज.)

M.B. College Old Boys Alumni Association

श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान

हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर

डॉ. यू.सी. जैन

विज्ञान संकाय

जब मेधावी विद्यार्थी भावी जीवन में शिक्षक का दायित्व ग्रहण करता है तो निश्चित ही राष्ट्र निर्माण में उसका योगदान उत्कृष्ट होता है। यह कथन डॉ. यू.सी. जैन के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर सटीक सिद्ध होता है। विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक के अध्ययन में आपकी उपलब्धियाँ श्रेष्ठ रहीं।

कोटा राजस्थान में 2 जुलाई 1934 को जन्में डॉ. जैन ने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.एससी. तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। व्याख्याता से अपना शैक्षणिक जीवन प्रारम्भ कर आप आचार्य पद पर पदौन्नत हुए। आप गणित जैसे दुरूह विषय के विशेषज्ञ हैं। आपके प्रभावी शिक्षण से विद्यार्थी अत्यन्त लाभान्वित हुए तथा 6 शोधार्थियों ने आपके निर्देशन में पीएच.डी. प्राप्त की। आपका अकादमिक सोच सदा ही उच्च श्रेणी का रहा।

सेवानिवृत्ति के उपरान्त डॉ. यू.सी. जैन जहाज मन्दिर तीर्थ पर ट्रस्टी प्रबन्धक के रूप में अपनी मानद सेवाएँ देते हुए ईश आराधना में संलग्न हैं। समाजसेवा के प्रति आपका समर्पित भाव सराहनीय है। हम आपके प्रतिभावान व गुरु गरिमा से युक्त व्यक्तित्व को नमन करते हैं। आप स्वस्थ, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु हों, इन्हीं शुभभावनाओं के साथ आपका हार्दिक नमन, वन्दन एवं अभिनन्दन।

शुभाकांक्षी

(सी.पी. जोशी)	(कैलाश मेघवाल)	(कैलाश विहारी वाजपेयी)	(शान्तिलाल भण्डारी)
मुख्य अतिथि	कार्यक्रम अध्यक्ष	अध्यक्ष	महासचिव

कार्यकारिणी एवं समस्त परिषद् सदस्य

दिनांक : 29 सितम्बर, 2019

इतिहास के पन्नों से

हाला संघ का इतिहास

भारत विभाजन से पूर्व सिन्धप्रदेश का हाला नगर व्यापारिक व सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में सुविख्यात था। 1800 मील लम्बी सिन्धु नदी उत्तर से दक्षिण में बहती थी। इसी नदी के नाम से ही सिन्धप्रदेश नाम प्रचलित हुआ। एक समय सिन्ध में 500 जैन मन्दिरों के साथ जैनधर्म की जाहोजलाली थी। 1200 वर्ष तक मुगलों का शासन रहते वहाँ मन्दिरों को लूटा व ध्वस्त किया गया। 19वीं शताब्दी तक मात्र 7-8 मन्दिर ही अस्तित्व में रह गए थे। हाला का जिनमन्दिर उसमें से एक था। हाला नगर (वर्तमान पाकिस्तान) में लगभग 40 परिवार एक फाटक बन्द दो मौहल्लों के परकोटे में निवास करते थे। जिसमें जिनमन्दिर, उपासरा, धर्मशाला, धार्मिक विद्यालय, पुस्तकालय इत्यादि थे। शहर में दो दादावाडियाँ थी। हाला संघ के सदस्य अपने धर्म व परम्पराओं के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। वहाँ का शासक वर्ग भी उनका सम्मान करता था।

भारत विभाजन की घोषणा के बाद जिस तरह का हिंसक महौल बना, हाला संघ ने प्राणों से प्यारे परमात्माओं कि प्राचीन प्रतिमाओं को नाकोडा तीर्थ पर पावणा रूप में विराजित करवाया तथा आंगी, ज्ञानभंडार इत्यादि धरोहर को सुरक्षित किया। छः महीने बाद हाला नगरी में अपना कीमती सामान छोड़ा परन्तु परमात्मा के मन्दिर की झाडू भी साथ लेकर आये। यह हाला संघ का जिनशासन व परमात्मा के प्रति समर्पण व भक्ति भाव का अनूठा उदाहरण है।

हिन्दुस्तान में आने के बाद कुछ दिन नाकोडाजी तीर्थ पर रुके, बाद में ब्यावर, बाड़मेर, फालना आदि स्थानों पर व्यापार आदि के लिए फैल गए। संघ के हर सदस्य के मन में एक मात्र यही भावना थी कि परमात्मा का मन्दिर एवं दादावाड़ी का पुनः निर्माण शीघ्र हो।

लगभग 35 वर्ष बाद भावना साकार हुई और ब्यावर में श्री संभवनाथ परमात्मा एवं श्री गौडी पार्श्वनाथ प्रभु का शिखरबद्ध भव्य जिनमन्दिर बना। मन्दिरजी में सभी मूर्तियाँ 700 से 2200 वर्ष (सम्प्रतिकालीन) तक की प्राचीन हैं।

फिर फालना में भी मन्दिर व दादाबाड़ी का निर्माण हुआ और उसमें आदिनाथ परामात्मा का शिखरबद्ध मन्दिर एवं प्राचीन दादा गुरूदेव के चरण व नई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

ब्यावर में श्री जिनकुशलसूरि ज्ञान भंडार के नाम से प्राचीन अनमोल धरोहर को सुरक्षित एवं संरक्षित किया गया। इस हस्तलिखित ज्ञानभंडार में स्वर्णाक्षरीय कल्पसूत्र, स्वर्णमय चित्र एवं अनेक प्राचीन ग्रन्थ हैं। श्री जीरावला पार्श्वनाथ तीर्थ का मुकदमा जो जोधपुर हाई कोर्ट में चल रहा था। साक्ष्य के रूप में उपलब्ध इसी ज्ञानभंडार की प्राचीन पाती को कोर्ट में पेश किया गया जिससे तीर्थ मुकदमे में जीत हुई। हाला संघ का सौभाग्य है कि जिनशासन के महान तीर्थ के पक्ष में प्राचीन हस्तलिखित पाती उपयोगी साबित हुई।

ब्यावर मन्दिर में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि द्वारा प्रतिष्ठित अधिष्ठायिका अंबिका देवी व चौमुखजी की पंचधातु मूर्ति दर्शनार्थ उपलब्ध है। पूर्वजों के सुसंस्कार प्रज्ज्वलित रहे। इसी कडी में समाज की छः बेटियों ने चारित्र जीवन अंगीकार कर आत्मकल्याण के साथ-साथ जिनशासन की शोभा बढ़ाई है। आप है- साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म., साध्वी प्रीतियशाश्रीजी म., साध्वी अमितयशाश्रीजी म.सा., साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., साध्वी दीपशिखाश्रीजी म. व साध्वी संयमसाक्षी श्रीजी म.।

हाला संघ के काफी परिवार बाड़मेर में भी निवास करते हैं। संघ में यह भाव था कि बाड़मेर में जिन मन्दिर का निर्माण हो। इस भावना के परिणाम स्वरूप बाड़मेर नगर में लगभग 25000 वर्ग फुट भूखण्ड पर शिखरबद्ध जिनमंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है।

ता. 2 फरवरी 2013 को परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु-साध्वी मंडल की पावन निश्रा में जिनमंदिर का खात मुहूर्त एवं शिलान्यास संपन्न हुआ एवं प्रतिष्ठा दिनांक 26 फरवरी 2020 को उन्हीं की पावन निश्रा में करवायी जायेगी।

जिनमंदिर का कार्य विशाल है। इसमें देवद्रव्य की अपेक्षा है। सकल संघ से निवेदन है कि इसमें अधिक से अधिक सहयोग समर्पित करवायें।

जिज्ञासा

शास्त्रों में गुरुमूर्ति का उल्लेख

शंका:- जैनागमों में 'गुरुमूर्ति' के विषय में कोई उल्लेख आता है क्या? कुछ लोग कहते हैं कि गुरुमूर्ति आगमिक नहीं है, आधुनिक प्रवृत्ति है।

समाधान:- 'गुरुमूर्ति आगमिक नहीं- आधुनिक प्रवृत्ति है' ऐसी बात आगमों का अभ्यास नहीं करने वाला (अज्ञानी) ही कह सकता है। क्योंकि छेदग्रंथादि अनेक आगमों में गुरुमूर्ति के उल्लेख मिलते हैं।

आवश्यक सूत्र- आगम में स्थापना निक्षेपा के वर्णन में 'गुरुविरहंमि ठवणा' आदि गाथाओं द्वारा विविध प्रकार की गुरु की स्थापना में गुरुमूर्ति का भी वर्णन मिलता है।

गणि विद्या प्रकीर्णक नामक आगम ग्रंथ में किस मुहूर्त्त में गुरुमूर्ति की प्रतिष्ठा करनी चाहिये, इसकी चर्चा की गई है, जिससे गुरुमूर्ति की भी सिद्धि होती है।

बृहत्कल्पसूत्र नामक छेदग्रंथ में एक उल्लेख मिलता है। जिसमें पाँच प्रकार के चैत्यों (जिनालयों) में 'साधर्मिक चैत्य' के वर्णन में श्री वारत्तक मुनि की रजोहरण-मुहपत्ती एवं पात्रादि सहित गुरुमूर्ति जिनालय में प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है।

श्री वारत्तक मुनि प्रभु श्री महावीर स्वामी के समकालीन थे, यह श्री चंडप्रद्योत राजा के साथ उनके सम्बंध से पता चलता है। यह पाठ इस प्रकार है-

वारत्तगस्स पुत्तो, पडिमं कासी य चेइयहरंमि।

तत्थ य थली अहेसी, साहम्मियचेइयं तं तु ॥1775॥

...यो वारत्तक इति नाम्ना महर्षिः, तस्य पुत्रः स्वपितरि भक्तिभरापूरिततया चैत्यगृहं कारयित्वा तत्र रजोहरण-मुखवस्त्रिका-प्रतिग्रहधारिणीं पितुः प्रतिमामस्थापयत्, तत्र च 'स्थली' सत्रशाला तेन प्रवर्तिता आसीत्, तदेतत् साधर्मिक-चैत्यम्॥

गाथा भावार्थः वारत्तक के पुत्र ने चैत्यघर में (उनकी प्रतिमा स्थापित करवाई) वहाँ स्थली प्रवर्तमान की, वही साधर्मिक चैत्य कहलाता है।

टीका भावार्थः वारत्तक नामक जो महर्षि थे, उनके पुत्र ने अपने पिता (मुनि) की अत्यंत भक्ति से प्रेरित होकर जिनालय बनवाकर उसमे रजोहरण-मुँहपत्ती और पात्रा धारी पिता (मुनि) की प्रतिमा स्थापित की, वहाँ स्थली अर्थात् सत्रशाला-दानशाला स्थापित की। ऐसा जिनालय 'साधर्मिक चैत्य' कहलाता है।

इसी प्रकार अवंति सुकुमाल मुनि के महाकाल नामक पुत्र ने पिता मुनि के अग्नि संस्कार स्थल पर जिनालय बनवाकर उसमें अपने पिता-मुनि की अनशन के समय की रजोहरण-मुहपत्ती सहित शियालनी द्वारा अंगोपांग खा लिये जाने के बावजूद समाधि-मग्न अवस्था की गुरुमूर्ति बनवाई थी-ऐसा उल्लेख भी कई स्थानों पर मिलता है। यह घटना दश पूर्वधर पू. आर्य श्री सुहस्तिसूरिजी महाराज के समय में घटित हुई थी, अर्थात् 2300 वर्ष पुरानी है।

(सन्मार्ग 16.09.2019 से साभार)

गीतिका

वीर प्रभु आरे

– पवन कोठारी, जैसलमेर

(तर्ज- दो दिल टूटे दो दिल हारे)

गौतम पुकारे वीर प्रभु आ रे।
दुनिया की रशमें निभाता जा रे।।
करते थे तुम तो मेरी शंका निवारण तत्काल ही,
मिलती थी मुझको खुशियाँ, गोयम के स्वर को सुनके नाथजी,
अब कौन मुझको गोयम पुकारे ।।1।।
मुझको को भी ले चलता संग, अपने ठिकाने महावीर रे,
मैं क्यां करूं अकेला, दिल में गडे है लाखों तीर रे,
कैसी सजा दी है त्रिशला के प्यारे ।।2।।
मैं तो अबोधा हूं पर, तूने क्यों धोखा दिया नाथ जी,
जानता सब था फिर भी, आई ना तुझको थोड़ी लाज जी,
देख लिया मैंने मतलबी सारे ।।3।।
करता विलाप मैं किस के लिए घोर राग से,
देखता मुझको है वो मोक्ष नगर के बाग से,
मैं भी आऊंगा पीछे तुम्हारे ।।4।।
तूं तो वैरागी था पर, मैं तो फसा था मोह मीत में,
धुल गया अंतर मेरा हार बदल गई जीत में,
केवल मिला प्रभु तेरे सहारे ।।5।।

महत्वपूर्ण दिवस

5 अक्टूबर, शनिवार : नवपद ओली प्रारंभ
12 अक्टूबर, शनिवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण
13 अक्टूबर, रविवार : नवपद ओली समाप्ति
25 अक्टूबर, शुक्रवार : आचार्य श्री जिनवल्लभसूरिजी म. पुण्यतिथि
26 अक्टूबर, शनिवार : धनतेरस
27 अक्टूबर, रविवार : पाक्षिक प्रतिक्रमण,
28 अक्टूबर, सोमवार : भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, दीपावली पर्व,
29 अक्टूबर, मंगलवार : नववर्ष प्रारंभ, निर्वाण लड्डू चढ़ाना, गौतम रास श्रवण
1 नवम्बर, शुक्रवार : ज्ञान पंचमी महापर्व
4 नवम्बर, सोमवार : चौमासी अठाई प्रारंभ
11 नवम्बर, सोमवार : चातुर्मासिक प्रतिक्रमण, चातुर्मास पूर्ण,
12 नवम्बर, मंगलवार : कार्तिक पूर्णिमा, सिद्धाचल महातीर्थ की भाव यात्रा

धुलिया में भजन प्रतियोगिता

धुलिया 15 सितंबर। पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केंद्रीय समिति द्वारा प्रायोजित तथा सु-संस्कृति फाऊंडेशन एवं रेडियो जय जिनेंद्र द्वारा आयोजित भजन प्रतियोगिता का ग्रैंड फाइनल प्रात: प्रवचन सभा में हजारों भक्तों के साक्षी में संपन्न हुआ।

सु-संस्कृति फाऊंडेशन एवं पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म. की प्रेरणा से संचालित विश्व का पहला रेडियो स्टेशन रेडियो जय जिनेंद्र द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में संपूर्ण भारत से संगीत में रुचि रखने वालों ने सहभाग लिया। विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि जिन्होंने कभी मंच पर आकर अपनी प्रस्तुति नहीं दी थी वैसी श्राविकाओं का भी इसमें समावेश था। यह स्पर्धा सिर्फ जैन भाई-बहिनों के लिये आयोजित की गयी थी।

इस स्पर्धा के तीन राउंड ऑनलाइन लिये गये थे। ग्रैंड फाइनल के लिये 21 स्पर्धकों का चयन किया था। उनके नाम बाहुबली मेहता ठाणे, डॉ. शीतल जैन शहादा, सौरव डोशी चेन्नई, नवरत्नमल बच्छावत जयपुर, मानसी बंब धुलिया, मोक्षिता जैन रतलाम, प्रिया कोठारी नासिक, प्रांजलि जैन बुलढाणा, गरिमा कोचर जलगाँव, धीरज जैन चेन्नई, मयूर चोपडाम ुबंई,ि चंतनक ोचरद ोंडाईचा,ज ान्हवीज ैनब ुलढाणा,द र्शितग ादियाज ालना,ि प्रयदर्शिनीज ैनइ ंदौर,म नीष कोठारी रतलाम, अपेक्षा पिपाडा इंदौर, खुशबू जैन पूणे, स्नेहल बोरा शिरूर, कविता टाटिया जलगाँव, सारिका जैन छिंदवाडा।

जैनम् स्टार अवार्ड की यह 2019 की स्पर्धा पहली बार वीडियो ट्रैक पर आयोजित की गयी थी। इस स्पर्धा के निर्णायक नासिक से संगीत विशारद प्रमोदजी देव, सारीका जी एवं धुलिया से योगेशजी जगताप की नियुक्ति की गयी थी।

सभी स्पर्धकों को सन्मान पत्र एवं स्मृतिचिन्ह देकर सन्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता मे जैनम् स्टार का प्रथम क्रमांक का अवार्ड सौरव डोशी चेन्नई को, द्वितीय अवार्ड धीरज जैन चेन्नई एवम् तृतीय अवार्ड जाह्नवी जैन बुलढाणा को प्राप्त हुआ।

धुलिया श्रीसंघ ने तन मन धन से इस प्रतियोगिता को संपन्न करने हेतू अपना अभूतपुर्व योगदान दिया। जितेंद्र टाटिया, स्वप्नील नहार, सुनिल भंसालीजी की मेहनत विशेष उल्लेखनीय रही। इस अवसर पर रेडियो जय जिनेंद्र के संस्थापक धनंजयजी जैन ने संचालन कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया था। भव्य भजन प्रतियोगिता के स्पर्धकों का उत्साह वर्धनक रनेह ेतुि छंदवाडा,इ ंदौर,ह ैद्राबाद,न ासिकन ंदुरबार,श ाहादा,र तलामअ ादिस ेब ड़ीक ास ंख्याम ेंभ ाक्तगण उपस्थित थे।

–प्रीति जैन नासिक

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

धुलिया 21-22 सितंबर। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् का दो दिवसीय चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा एवं साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. की निश्रा में महाराष्ट्र के धुलिया नगरी में आयोजित किया गया।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त ने अधिवेशन में युवाओं को वफादारी, समझदारी, जिम्मेदारी एवं इमानदारी के मूल मन्त्र प्रदान करते हुए जीवन में समर्पण को अपनाने का संदेश दिया एवं मुनि मनितप्रभसागरजी ने अनुशासन को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी ने साधु-साध्वी भगवन्तों के विहार वैयावच्च में युवा परिषद् के सहयोग की मुक्त कण्ठ से सराहना की। अधिवेशन में पधारे हुए समस्त सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश कुमार लूणिया ने परिषद् के भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा बताई, राष्ट्रीय चेयरमेन पदमचन्द बरडिया द्वारा अधिवेशन की औपचारिक शुरूआत की गई। मुख्य अतिथियों एवं केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्यों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन, ध्वजारोहण किया गया एवं युवा परिषद् गीत द्वारा सलामी प्रदान की गई।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री रमेश कुमार लुंकड़ ने विगत वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी गुरुदेव को एवं सदस्यों को प्रदान की। राष्ट्रीय सहमन्त्री ललित डाकलिया ने परिषद् की वर्तमान सदस्य संख्या को बढ़ाने के साथ ही आज के डिजीटल युग में संसाधनों के उपयोग की बात कही। अधिवेशन के प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के अध्यक्ष बैंगलोर से श्रीमान संघवी तेजराजजी गुलेच्छा ने अपने सम्बोधन में युवा सदस्यों को टाइम मेनेजमेन्ट कैसे किया जाए इस बारे में समझाया। द्वितीय दिवस के मुख्य अतिथि मुंबई से जीतो एपेक्स के अध्यक्ष श्रीमान गणपतराजजी चौधरी ने युवाओं को अपने व्यापार में आगे बढने के गुर सिखाए।

समारोह में इन्कम टैक्स कमिश्नर श्री के. एल. माहेश्वरी ने भी अपने परिवार सहित पधारकर गुरुदेव से आशीर्वाद लिया और युवाओं को समाज सेवा के साथ धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कोषाध्यक्ष राजीव खजांची ने परिषद् के कार्यकलापों की जानकारी सदस्यों को दी। अधिवेशन में पूरे देश भर की करीब 80 शाखाओं से करीब 750 सदस्यों ने अपनी उपस्थिती दर्ज करवाई।

महाराष्ट्र प्रदेशाध्यक्ष एवं आगामी जनवरी में खरतरगच्छ के नामकरण के 1000 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में युवा परिषद् द्वारा एक वृहद् छःरी पालित संघ यात्रा के संयोजक प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने इस संघ यात्रा की रूपरेखा के बारे में बताया एवं सभी सदस्यों के सहयोग की अपेक्षा की। साथ ही युवा परिषद् के स्वाध्याय प्रकोष्ठ द्वारा इस वर्ष भारत भर के 25 संघों में 60 स्वाध्यायियों के द्वारा पर्युषण पर्व की आराधना करवाने की जानकारी प्रदान की एवं आगामी वर्ष में देश के 50 संघों में पर्युषण पर्व की आराधना का लक्ष्य रखा गया। गत वर्ष के स्वाध्यायियों एवं युवा परिषद् तथा महिला परिषद् द्वारा संचालित ज्ञान वाटिकाओं के बच्चों को दो प्रतिक्रमण एवं पंच प्रतिक्रमण सीखने पर युवा परिषद् द्वारा संघवी तेजराजजी गुलेच्छा के सौजन्य से बहुमान किया गया। साथ ही मुंबई शाखा द्वारा चांदी के मेडल द्वारा समस्त बच्चों का सम्मान किया गया।

गुरुदेव द्वारा युवा परिषद् के अन्तर्गत ज्ञान वाटिका प्रकोष्ठ एवं गच्छ की सुविहित क्रिया हेतु विधी विधान प्रकोष्ठ एवं उनके संयोजकों की घोषणा की गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम के आयोजक श्री शीतलनाथ संस्थान धूलिया, धुलिया श्री संघ एवं केयुप धूलिया शाखा व शाखा अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी टांटिया एवं उनकी टीम के साथ खानदेश की सभी शाखाओं के सहयोग के साथ इस सफलतम अधिवेशन हेतु इतने विशाल स्तर पर आवास, भोजन आदि समस्त व्यवस्थाएं सुंदरतम रूप से की। इस हेतु विशेष बहुमान केयुप की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा किया गया। इस अधिवेशन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले समस्त महानुभावों का हृदय की गहराईयों से महामन्त्री रमेश लुंकड़ द्वारा हार्दिक आभार प्रकट किया गया। आगामी वर्ष पुनः नए जोश के साथ पंचम अधिवेशन में मिलने के वादे के साथ ही गुरुदेव श्री द्वारा अधिवेशन के समापन की घोषणा की गई। अधिवेशन में सम्पूर्ण भारत के अनेक श्रीसंघों, प्रदेशाध्यक्षों, समस्त प्रकोष्ठों के संयोजक एवं युवा परिषद् शाखाओं के सदस्यों की उल्लेखनीय उपस्थिती रही।

छह री पालित संघ के बैनर, एवं फार्म का विमोचन गुरुदेव श्री की निश्रा में मुख्य अतिथियों के द्वारा किया, अधिवेशन में सुरक्षा प्रकोष्ठ के संयोजक चम्पालाल वाघेला, स्वाध्याय प्रकोष्ठ के सह संयोजक ललित कवाड, वैयावच्च विभाग के संयोजक भेरूलाल लूनिया, सह संयोजक मनीष मेहता, प्रचार प्रसार संयोजक धनपत कानुंगो, सह संयोजक अंकित बोहरा, व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ के सह संयोजक कल्पेश अरणाईया ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए अपने क्षेत्र की गतिविधियों से अवगत कराया। अधिवेशन में संघवी श्री वंशराजजी भंसाली, पूर्व चेयरमेन श्री अशोककुमारजी भंसाली, पूर्व अध्यक्ष श्री रतनलालजी बोथरा, श्री बाबुलालजी लूणिया की भी उपस्थिती रही।

इसी के साथ केयुप की सौ के करीब शाखाओं में से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों की घोषणा की गई जिसमें प्रथम पुरस्कार बीकानेर, द्वितीय मुंबई एवं इचलकरंजी शाखा को एवं तृतीय अक्कलकुआ, सूरत पाल एवं अहमदाबाद शाखाओं को प्रदान किए गए।

-ललित डाकलिया, सहमंत्री केयुप

केयुप में नये प्रकोष्ठों की घोषणा

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् में तीन नये प्रकोष्ठों की घोषणा की गई।

1. अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ- संयोजक शुभम् भंसाली, अक्कलकुआ

2. विधि-विधान प्रकोष्ठ- संयोजक रमेश मालू कानासर वाले, बाडमेर

3. ज्ञान वाटिका प्रकोष्ठ- संयोजक अजय डागा, नंदुरबार, सहसंयोजक- यशवंत रांका ब्यावर

तीनों प्रकोष्ठों के संयोजकों को दायित्व सौंपा गया। अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के संयोजक शुभम् भंसाली इस क्षेत्र में कार्य करेंगे कि समाज के श्रावक-श्राविकाऐं कैसे अल्पसंख्यक होने का लाभ प्राप्त कर सकते हैं! इसकी प्रक्रिया सरलता से कैसे समझी जा सकती है। अधिवेशन में शुभम् भंसाली ने अल्पसंख्यक के संदर्भ में विस्तार से पूरी जानकारी दी।

विधि-विधान प्रकोष्ठ के अन्तर्गत खरतरगच्छ की विधि अनुसार विधिकारक तैयार करने हेतु शिविरों का आयोजन करना। उन्हें पूज्य गुरु भगवंतों की निश्रा में कुंभ स्थापना, अठारह अभिषेक, प्रतिष्ठा आदि विधि विधान का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

ज्ञानव ाटिकाप्रकोष्ठक ेअ न्तर्गतप ूरेभ ारतम ेंज्ञ ानव ाटिकाख ोलना,उ नकास ंचालनक रना,प ाठ्यक्रमक ी एकरूपता लाना तथा उनकी राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षाऐं लेना आदि कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

केयुप द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक गुरु इकतीसा जाप का आयोजन

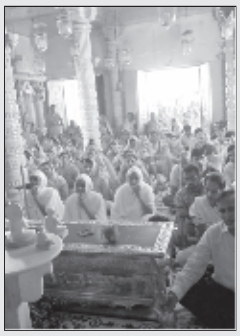

भारत 27 सितंबर! केयुप की एक आवाज... सभी शाखाएँ एक साथ... कार्यक्रम के अंतर्गत पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावनकारी प्रेरणा एवं आह्वान पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् सहित देशभर के समस्त श्री संघों में सामूहिक गुरु इकतीसा का पाठ एवं भक्ति का आयोजन किया गया।

आसोज वदी १३ शुक्रवार सिंह लग्न का सुखद संयोग एक साथ कई वर्षों बाद एक साथ आता है।

संवत आठ दोय हजारा, आसो तेरस शुक्करवारा,

शुभ मुहूर्त वर सिंह लगन में, पूरण कीनो बैठ मगन में।

आज से ठीक 68 वर्ष पूर्व महाप्रभावी दादा गुरुदेव इकतीसा की रचना जिस पुण्य पल में हुई थी वो दिन था आसोज वदी तेरस शुक्रवार का दिन, जिस दिन पूर्व में शुक्रवार सिंह लग्न में छड़ीदार गोपालजी ने गुरु इकतीसा लिखकर श्रीपूज्य विजयेन्द्रसूरिजी म.सा. को अर्पित किया था जो श्री संघ के सामने यह इकतीसा बाचा गया जो आज सभी जगह श्रद्धा से पढा जाता है जाप होते है।

आसोज वदि तेरस शुक्रवार का संयोग कई वर्षों में होता है। यह सुखकारी संयोग इस वर्ष 27 सितंबर को था। इस शुभ अवसर को बधाने के उद्देश्य से केयुप द्वारा इकतीसा पाठ का आयोजन देशभर में किया गया। देश विदेशों में दो सौ से अधिक स्थानों पर हजारों गुरुभक्तों ने इस सामुहिक इकतीसा पाठ में शामिल होकर इतिहास बनाया। संभवत: प्रथमबार इतने विशाल स्तर पर दादागुरुदेव इकतीसा पाठ का आयोजन किया गया जो ऐतिहासिक व सफल रहा।

कई स्थानों पर तो प्रात: 3-4 बजे से ही सिंह लगन में पाठ प्रारंभ किया गया। अधिकांश जगहों पर 108 इकतीसा पाठ किया गया। रात्रि में गुरु भक्ति का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर केयुप, केएमपी एवं सभी संघों में गजब का उत्साह देखा गया। खरतरगच्छ की एकता एवं संगठन शक्ति को और अधिक मजबूत बनाने की दिशा में आज का यह सामूहिक आयोजन महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

-धनपत कानुंगो, राष्ट्रीय संयोजक (प्रचार प्रसार), केयुप

अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद (केएमपी) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का हुआ गठन

धुलिया 22 सितंबर। अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद (केएमपी) की नवीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन धुलिया में आयोजित दो दिवसीय चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन में खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी की निश्रा में किया गया, जिसमें चेयरपर्सन नर्बदादेवी जैन बाड़मेर, अध्यक्षा सरोजदेवी गोलेच्छा राजनांदगांव, वरिष्ठ उपाध्यक्षा आरतीदेवी चण्डालिया बेंगलोर, महामंत्री कवितादेवी ललवानी इचलकरंजी, कोषाध्यक्षा रेनुदेवी खजांची बीकानेर, सहमंत्री सरितादेवी मेहता बाड़मेर, संघटन मंत्री मंजूदेवी कोठारी रायपुर, प्रचार प्रसार मंत्री मंजूदेवी अहमदाबाद को नियुक्त किया गया। खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय समिति की ओर से सभी नवीन और गुरुदेव द्वारा चयनित पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान की गई।

महत्तराजी की पुण्यतिथि मनाई

अहमदाबाद 4 सितंबर। पू. महत्तरा श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 31 पुण्यतिथि पंचाह्निका महोत्सव के साथ श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ जैन संघ में हर्षोल्लास से मनाई गयी।

समुदायाध्यक्षा पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 31वीं पुण्यतिथि भादवा सुदी 9 को पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चंपाकली गच्छगणिनी पू. सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पू. स्नेह सुरभि साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की निश्रा में श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ जैन श्रीसंघ, दादासाहेब ना पगला, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मनाई गई।

4 सितंबर, प्रथम दिन की शुरूआत में अनुकंपा दान एवं विकलांग के लिये 21 व्हीलचेअर का समर्पण बारह लाभार्थी परिवारों द्वारा श्री भगवान महावीर विकलांग सेवा समिति आदि को किया गया।

ता. 5/9/2019 गुरुवर्या श्रीजी के त्यागमय संयम जीवन के अनुमोदना हेतु गुरुभक्तों के द्वारा सामूहिक सामायिक एवं दादागुरुदेव इकतीसा जाप हुआ उसके बाद पूज्य साध्वीश्री का प्रवचन हुआ।

ता. 6/9/2019 पूज्य गुरुवर्याश्री का 85 वर्ष के संयम पर्याय के अनुमोदनार्थ चारित्र धर्म की महिमा बताने के लिए चारित्र वंदनावली व उपकरण वंदनावली लाभार्थी परिवार की तरफ से रखी गयी। जिसमें विविध उपकरणों की सजावट की गयी, त्याग के चढ़ावे बुलवाये गय। संगीतकार भरत टी. ओसवाल मुम्बई द्वारा चारित्र वदंनावली का संगीत दिया।

ता. 7/9/2019 गुरुवर्याश्रीजी का भादवा सुदि नवमी के दिन 31वीं पुण्यतिथि निमित्ते गुणानुवाद किया गया। गुणानुवाद के दरम्यान प्रवचन में साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि उनको गुरुवर्याश्री के सानिध्य में अनुभव किया कि गुरुवर्या का निर्लिप्त जीवन आज भी इस धरती पर संयम की सुवास फैला रहा है। गुरुभक्तों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित, माल्यार्पण एवं सामूहिक गुरुपूजन का प्रोग्राम लाभार्थी परिवारों के सौजन्य से किया गया।

इस शृंखला में सिद्धितप के तपस्वी बहनों का वरघोड़ा भी हर्षोल्लास के साथ पूज्य साध्वीजी के निश्रा में घोड़ाबग्घी एवं बैंडबाजे की हर्षध्वनि के साथ निकाला गया। अहमदाबाद खरतरगच्छ श्रीसंघ द्वारा तपस्वियों का बहुमान किया गया। श्रीसंघ में शांति हेतु लघुशांति महापूजन व परमात्मा भक्ति का अनुष्ठान हुआ।

ता. 8/9/2019 को 161 जोडों सहित दादा गुरुदेव महापूजन करवाया गया। पूजन की महिमा खरतरगच्छ के इतिहास में चारों दादा गुरुदेव के चमत्कारी प्रभाव के बारे में बताया गया। पूज्य साध्वीश्री ने प्रवचन के दौरान खरतरगच्छ के महान् गुरु भगवन्तों के जीवन पर प्रकाश डाला। पूजन में संगीत द्वारा की धुम मचाने आये सुप्रसिद्ध संगीतकार दादागुरुदेव के परम भक्त लवेशभाई बुरड़ एवं पार्टी ने भव्य समां बांधा। सरदार वल्लभभाई पटेल राजभवन में लवेश बुरड़ ने रात्रि भक्ति में अपनी जोशीली आवाज व गीतों के माध्यम से सभी के मन को मोहा!

31वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 31 लक्की ड्रा खुलवाये जिसमें नियम के साथ ईनामों को वितरण किया गया एवं बाहर गाँव से पधारे मेहमानों का बहुमान किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये खरतरगच्छ श्रीसंघ के सभी ट्रस्टीगण, चातुर्मास कमेटी 2019 संयोजक महोदय, प्रोग्राम कमेटी, भोजन कमेटी, आवास कमेटी, वेयावच्च कमेटी, प्रचार कमेटी के सभी संयोजक एवं श्रीसंघ के सभी सदस्यों ने पूरा तन मन धन के साथ सहयोग दिया।

सूरत पाल स्थित शंखेश्वरा हाईट्स में 6 दिसम्बर को प्रतिष्ठा

धुलिया 11 सितंबर। सूरत पाल में स्थित श्री शंखेश्वरा हाईट्स में संघवी श्री दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री शांतिनाथ प्रभु के अतिभव्य विशाल शिखरबद्ध जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा मिगसर सुदि 10 शुक्रवार ता. 6 दिसम्बर 2019 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न होगी।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

संघवी मरडिया परिवार के श्री मोहनलालजी लालचंदजी शांतिलालजी घेवरचंदजी राजमलजी मरडिया सपरिवार इष्ट मित्रों सहित 200 व्यक्तियों का विशाल संघ लेकर प्रतिष्ठा कराने की विनंती करने व प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये पूज्य आचार्यश्री की सेवा में ता. 11 सितम्बर को धुलिया पहुँचे। उन्होंने वरघोडे के साथ प्रवचन सभा मंडप में प्रवेश किया। पूज्यश्री से प्रतिष्ठा कराने की भावभीनी विनंती की।

पूज्यश्री ने कहा- चितलवाना का यह मरडिया परिवार अत्यन्त पुण्यशाली है जिन्हें स्वद्रव्य से जिन मंदिर बनाने का अनुपम अवसर प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व इसी परिवार की ओर से चितलवाना से श्री शंखेश्वर तीर्थ का छह री पालित संघ आयोजित हुआ। संघ माला के पावन अवसर पर सूरत में जिनमंदिर बनाने का संकल्प लिया था। आज वह संकल्प पूर्ण होने जा रहा है।

पूज्यश्री ने विनंती स्वीकार करते हुए मिगसर सुदि 10 ता. 6 दिसम्बर 2019 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त प्राप्त कर मरडिया परिवार ने हर्षोल्लास से भर कर नृत्य कर बधाया। इस जिनमंदिर में मूलनायक परमात्मा शांतिनाथ प्रभु के साथ गौतम स्वामी, दादा जिनकुशलसूरि, नाकोडा भैरव आदि प्रतिमाऐं भी प्रतिष्ठित होगी।

समारोह का प्रारंभ 2 दिसम्बर से होगा। 5 दिसम्बर को भव्य वरघोडा एवं 7 दिसम्बर को द्वारोद्घाटन संपन्न होगा।

केयुप सूरत शाखा–1 के गौतम मालू अध्यक्ष एव गणपत भंसाली सचिव

सूरत 19 सितंबर। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में बने अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की सूरत शहर शाखा-1 की नूतन कार्यकारिणी का कुशल दर्शन दादावाड़ी में सर्वसंमति से गठन किया गया।

मीटिंग में संरक्षक पारसमल गोठी, अध्यक्ष गौतमचंद हालावाला, सचिव छगनलाल घीया, भगवानदास मालू सहित केयुप के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। सर्वसंमति से केयुप सूरत शाखा के अध्यक्ष पद पर श्री गौतमचंद शंकरलालजी मालू कगाउ हाल सूरत को बनाया गया। अन्य कार्यकारिणी सदस्यों में उपाध्यक्ष:- पिंटू धारीवाल, उपाध्यक्ष:- संजय छाजेड, सचिव:- गणपत भन्साली, कोषाध्यक्ष:- संपत पारख का चयन हुआ।

सभा के अंत में निर्वतमान अध्यक्ष गौतमजी हालावाला एव निवर्तमान सचिव छगनलालजी घीया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-चंपालाल छाजेड़

श्री कैलाशजी संकलेचा के स्वस्थता की कामना

जहाज मंदिर के प्रचार मंत्री, जीरावला दादावाडी ट्रस्ट के संयोजक, पादरु दादावाडी के अध्यक्ष श्री कैलाशजी संकलेचा कुछ दिनों से अस्वस्थ है। जिनका उपचार निरंतर जारी है।

श्री कैलाशजी का स्वास्थ्य अतिशीघ्र स्वस्थ हो, ऐसी परमात्मा एवं दादा गुरुदेव से प्रार्थना।

22–9–2019 को धुलिया नगर में पुरस्कृत बच्चे

प्रतिक्रमण सीखने वालों को पुरस्कार

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की घोषणा के अनुसार केयुप अथवा केएमपी द्वारा संचालित ज्ञान वाटिका में जिन्होंने पांच प्रतिक्रमण सूत्रों को स्पष्ट रूप से याद किया है, उन बच्चों को 21 हजार रूपये की राशि का तथा दो प्रतिक्रमण सूत्रों को याद करने वाले बच्चों को 11 हजार रूपये की राशि का प्रोत्साहन पुरस्कार अर्पण किया जायेगा।

इस घोषणा के अनुसार केयुप - केएमपी के चौथे राष्ट्रीय अधिवेशन में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में 5 छात्र-छात्राओं को पंच प्रतिक्रमण सूत्र स्मरण करने पर 21 हजार रूपये की राशि से पुरस्कृत किया गया। तथा 48 छात्र-छात्राओं को 11 हजार रूपये की राशि से पुरस्कृत किया गया।

उन सभी छात्र छात्राओं की स्वाध्याय प्रकोष्ठ संयोजक व केयुप के राष्ट्रीय महामंत्री रमेश लूंकड व उनकी टीम द्वारा परीक्षा ली गई।

इस पुरस्कार के प्रायोजक मोकलसर-बैंगलोर निवासी संघवी पुखराजजी तेजराजजी गोलेच्छा हैं। पिछले दो वर्षों से उनकी ओर से पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है।

साथ ही मोकलसर-हैदराबाद निवासी श्री रमेशकुमारजी पारख परिवार की ओर से सोने का सिक्का तथा केयुप की मुंबई शाखा की ओर से चांदी का सिक्का सभी उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को प्रदान किया गया।

पंच प्रतिक्रमण

1. मंथन कुमार रमेश कुमार लुंकड	इचलकरंजी
2. श्रद्धा कुमारी रमेश कुमार लुंकड	इचलकरंजी
3. मित्ताली अशोकचंदजी झाबक	खापर
4.भावना पुष्पलालजी गुलेच्छा	शहादा
5. रिंकु राजेशजी मण्डोवरा	सूरत-पाल

दो प्रतिक्रमण

1.कु. खुशी महेन्द्रजी डागा	अक्कलकुवा
2.कु. दिशा विनोदजी ललवाणी	अक्कलकुवा
3. कु. भव्या महेन्द्रजी डागा	अक्कलकुवा
4. कु. मानसी महावीरजी पारख	अक्कलकुवा
5. कु. मोक्षा जितेन्द्रजी डागा	अक्कलकुवा
6. कु. मोक्षा सुरेशजी गुलेच्छा	अक्कलकुवा
7. कु. रिद्धि महेन्द्रजी डागा	अक्कलकुवा
8. कु. रोशनी अशोकजी झाबक	अक्कलकुवा
9. कु. सिद्धि महावीरजी पारख	अक्कलकुवा
10. कु. रविना सुरेशजी बोथरा	धोरीमन्ना
11. कु. आरती जोगेन्द्रजी बोथरा	बाड़मेर
12. कु. चिंकी गौतमचंदजी बोथरा	बाड़मेर
13. कु. निरमा रतनलालजी छाजेड	बाड़मेर
14. कु. प्रिया गौतमचंदजी संखलेचा	बाड़मेर
15. कु. ममता पिताम्बरजी बोथरा	बाड़मेर
16. कु. मुस्कान रमेशजी छाजेड	बाड़मेर
17. कु. राखी केवलचंदजी नाहटा	बाड़मेर
18. कु. रूचिका अमृतजी मालू	बाड़मेर
19. कु. शिवानी प्रकाशजी संखलेचा	बाड़मेर
20. कु. शिवानी रमेशजी बोथरा	बाड़मेर
21. कु. आयुषी दिनेशजी सावनसुखा	बीकानेर
22. कु. ऐश्वर्या राजेशजी (शाह) बोथरा	बीकानेर
23. कु. क्रिशा राजेन्द्रजी ललवानी	बीकानेर
24. कु. खुशबु महावीरजी नाहटा	बीकानेर
25. कु. रक्षा धर्मेन्द्रजी खजांची	बीकानेर
26. कु. सिद्धार्थ धर्मेन्द्रजी खजांची	बीकानेर
27. महावीर भंवरलालजी खजांची	बीकानेर
28. कु. आंचल विनोदजी बाफणा	शहादा
29. कु. कोमल दिलिपजी नाहटा	शहादा
30. कु. ज्योति सुरेशजी बाफणा	शहादा
31. कु. तनुष्का सचिनजी नाहटा	शहादा

32. कु. दिया संदीपजी नाहटा	शहादा	41. कु. माही अरविंदजी लुणिया	सूरत-पाल
33. कु. यशा अनिलजी छाजेड	शहादा	42. कु. यश्वी राजुजी लुणिया	सूरत-पाल
34. कु. लब्धी अनिलजी बोथरा	शहादा	43. कु. रिद्धि राजेशजी देसाई	सूरत-पाल
35. गौरव प्रवीणजी लुणिया	शहादा	44. कु. वाणी कमलेशजी मरडिया	सूरत-पाल
36. पलक जयेशजी नाहटा	शहादा	45. कु. सिया जसराजजी सिंघवी	सूरत-पाल
37. प्रिंस जितेन्द्र बैद	शहादा	46. ध्रुव मनोजजी लुणिया	सूरत-पाल
38. कु. अमीषी अरविंदजी गांधी	सूरत-पाल	47. नील अशोकजी मण्डोवरा	सूरत-पाल
39. कु. जान्हवी अशोकजी मण्डोवरा	सूरत-पाल	48. पूजन किशोरजी देसाई	सूरत-पाल
40. कु. तमन्ना संजयजी सिंघवी	सूरत-पाल		

श्री कोयम्बतुर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के चुनाव संपन्न

कोयम्बतुर 18 अगस्त। कोयम्बतुर खरतरगच्छ संघ की वार्षिक साधारण सभा में वर्ष 2019 से 3 वर्ष के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया है जिसमें निम्न पदाधिकारियों को परम उपकारी चारों दादा गुरुदेव की असीम कृपा एवं वर्तमान गच्छाधिपति के आशीर्वाद से सर्वसम्मति पूर्वक चयनित किया गया।

अध्यक्ष- श्री सुरेंद्र कुमार आत्मज मांगीलालजी गोलेछा,
उपाध्यक्ष - श्री पूनमचन्द आत्मज त्रिलोकचन्दजी झाबक,
सचिव- श्री श्यामसुन्दर आत्मज पारसमलजी लूणिया,
सहसचिव- श्री निर्मल कुमार आत्मज जसराजजी गोलेछा,
कोषाध्यक्ष- श्री चैनराज आत्मज रतनचन्दजी गोलेछा,
सहकोषाध्यक्ष-श्री सागर बच्छावत आत्मज हरीश जी बच्छावत।

साथ ही सभा में पूज्य गच्छाधिपति के मार्गदर्शन अनुसार पूर्ण सहमति से यह निर्णय लिया गया है कि वर्तमान में संघ के पास जो भूमि एवं भवन है उसी में ही एक छोटे से जिनालय का निर्माण करके परमात्मा को अतिथी रूप में विराजमान किया जावे।

-गौतमचन्द नाहटा, अध्यक्ष- खरतरगच्छ संघ, कोयम्बतुर

कैलाश संकलेचा मूर्तिपूजक महासंघ के अध्यक्ष मनोनीत

बेंगलुरु। कुमारकृपा रोड़ स्थित गेस्ट हाउस में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक युवक महासंघ के प्रमुख पदाधिकारियों की आवश्यक मीटिंग आयोजित हुई। अंतरराष्ट्रीय चेयरमैन सुनील सिंघी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महामंत्री सुनील गांग व राष्ट्रीय जैन माइनॉरिटी ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष गौतम जैन भी मौजूद रहे। इस दौरान महासंघ के तत्वावधान में आगामी दिनों में होने वाले विविध क्रियाकलापों पर विस्तार से चर्चा हुई। साथ ही इस मौके पर सर्व सम्मति से शहर के ऊर्जावान-सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता कैलाश संकलेचा को बेंगलुरु का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। नवमनोनीत अध्यक्ष संकलेचा आगामी एक पखवाड़े में अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करेंगे। युवक महासंघ बेंगलुरु के अध्यक्ष अशोक भंडारी की टीम ने संकलेचा के मनोनयन पर प्रसन्नता जताते हुए उनका सम्मान किया। मंत्री प्रवीण पोरवाल ने बताया कि इस अवसर पर आगंतुक अतिथियों का भी स्वागत सत्कार किया गया। कैलाश संकलेचा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

वडोदरा श्रीसंघ में आराधना एवं अनुष्ठानों की बहार

श्री खरतरगच्छ जैन संघ वडोदरा के तत्त्वावधान में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं प्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरुवर्या पू. साध्वी हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं, पू. साध्वी श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी दीपमालाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी कल्याणमालाश्रीजी म. का मंगलमय चातुर्मास प्रवेश होते ही श्रीसंघ में स्वाध्याय, आराधना, तप-जप के कार्यक्रमों की शृंखला शुरु हुई।

प्रारंभ जैन इतिहास के अमरपात्र ''पूणिया श्रावक'' की सामायिक आराधना से हुई। सामायिक का महत्व और उससे मिलने वाले लाभ के बारे में पूणिया श्रावक के जीवन पर सुंदर द्रष्टांत बताकर सबको अवगत कराया।

इसके बाद महामंगलकारी नवकार मंत्र के 68 अक्षर पर पूजन अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। पू. साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में आजवा रोड स्थित झाबक भवन के परिसर में पंडित श्री हेमंतभाई शाह ने परमात्मा की संगीतमय भक्ति के साथ नवकार मंत्र के 68 अक्षरों पर भव्य अनुष्ठान करवाया। सभी आराधकों ने परमात्मा भक्ति का भरपूर निजानंद लिया।

11 अगस्त, अचिंत्य प्रभावी, 22वें तीर्थंकर गिरनार मंडल श्री नेमिनाथ भगवान के जन्म-दीक्षा कल्याणक के उपलक्ष में श्री गिरनारजी महातीर्थ की भावयात्रा का सुंदर आयोजन हुआ, जिसमें पू. साध्वी दीपमालाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में दिक्षार्थी कु. नीलिमा भंसाली ने श्री नेमिनाथ परमात्मा की भक्ति करवाई। प्रोजेक्टर द्वारा तीर्थ के जिनप्रासादों का अलौकिक दर्शन करवा कर भावयात्रा सम्पन्न करवाई। संगीतकार अनंत शाह और दीक्षार्थी नीलिमा की जुगलबंदी ने भव्यात्माओं के हृदय को भाव विभोर किया।

18 अगस्त, परमात्मा की स्वद्रव्य से युक्त पूजन सामग्री के साथ दस त्रिक सहित सामूहिक अष्टप्रकारी पूजा का अवसर श्री संघ के आंगन में साकार हुआ। पू. श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में मुमुक्षु नीलिमा द्वारा भाववाही शैली में प्रस्तुत इस ज्ञान सभर भक्ति का लाभ संघ के लगभग संपूर्ण परिवारों ने लिया।

पर्युषण के प्रथम दिन सूत्रग्रंथ पू. गुरुवर्या श्री को समर्पण का कार्यक्रम हुआ। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के अंतर्गत आठों दिन तप-जप की साधाना, आराधना, प्रवचन, श्री महावीर स्वामी जन्म वाचन कार्यक्रम, पालणा उत्सव, प्रभु भक्ति, दादा गुरुदेव भक्ति, श्री कल्पसुत्र भक्ति, अट्ठाई तप, अक्षय निधि तप सहित सामुहिक पौषध व्रत की आराधना पूरे आनंद उल्लास और उमंग के साथ सम्पन्न हुई। चातुर्मास के पावन दिनों में पू. साध्वीजी भगवंतों की परम पावन निश्रा में अट्ठम तप आराधना, सांकली आयंबिल की आराधना के साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम हुए। जिसमें भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक के दिन श्रेष्ठ पालणा प्रतियोगिता हुई, इसमें साधकों ने हीरा, मोती, सोना चांदी, स्टोन, जडतर आदि द्रव्यों द्वारा भगवान का पालणा बनाया था। तीन श्रेष्ठ कृति को आकर्षक पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया।

श्रेष्ठ आंगी प्रतियोगिता के अंतर्गत नवपद सोसायटी स्थित महावीर स्वामी जिनालय में स्वद्रव्यों से भगवान की प्रतिमाओं पर पांच ग्रुप के भक्तों ने भावोल्लास पूर्वक आंगी की अद्‌भूत सर्जन किया था। पर्युषण पर्व दरम्यान कल्पसूत्र के आधारित 'कल्पसूत्र क्वीज'' प्रतियोगिता हुई, जिसमें 54 लोगों ने भाग लेकर के ज्ञान की अभिवृद्धी करते हुए आनंद की अनुभूति की। बच्चों के लिये कृष्णावतार वेशभूषा प्रतियोगिता, श्रेष्ठ गहुली बनाना सीखे जैसे विविध सुंदर कार्यक्रमों में संघ के सभी भविजनों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व के पश्चात सामूहिक पारणा एवं चैत्य परिपाटी का आयोजन हुआ। तपश्चर्या के अनुमोदनार्थे तपोवन्दना कार्यक्रम उपरांत श्री ऋषिमंडल महापूजन का भव्य आयोजन स्वामी वात्सल्य सहित रखा गया।

अमितकुमार सालेचा

सूरिमंत्र साधना प्रारंभ

धुलिया 26 सितंबर। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र की साधना का प्रारंभ ता. 26 सितम्बर 2019 से हुआ है। चौथी व पांचवीं दोनों पीठिकाओं की साधना एक साथ संपन्न होगी। चौथी पीठिका में गणिपिटक यक्षराज एवं पांचवीं पीठिका में गणधर श्री गौतमस्वामी की आराधना की जायेगी।

इससे पूर्व सन् 2016 के दुर्ग चातुर्मास में प्रथम सरस्वती पीठिका की, सन् 2017 बीकानेर चातुर्मास में त्रिभुवन स्वामिनी देवी की एवं सन् 2018 इन्दौर चातुर्मास में महालक्ष्मी देवी की साधना पूर्ण की थी। इन दोनों पीठिकाओं की साधना के साथ पूज्यश्री की पांचों पीठिकाओं/पंच प्रस्थान की साधना संपन्न हो जायेगी।

ता. 26 सितम्बर 2019 को श्री गौतमस्वामी एवं श्री गणिपिटक यक्षराज की प्रतिमाऐं पूज्यश्री को अर्पण की गई। श्री गौतमस्वामी की प्रतिमा अर्पण करने का लाभ धुलिया श्री संघ के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी स्वप्निलजी नाहर परिवार ने लिया।

मुनि मंडल, साध्वी मंडल एवं सकल श्री संघ ने पूज्यश्री को साधना के लिये शुभकामनाऐं अर्पण की। जब तक पूज्यश्री की साधना चलेगी, तब तक धुलिया श्री संघ में प्रतिदिन आयंबिल तप की आराधना व विशेष जाप का आयोजन किया गया है।

ता. 20 अक्टूबर 2019 को प्रात: 5 बजे सूरिमंत्र महापूजन होगा। तत्पश्चात् प्रात: ठीक 9 बजे पूज्यश्री साधना कक्ष से बाहर पधार कर महामांगलिक प्रदान करेंगे।

आर्य मेहुलप्रभसागरजी के जन्म दिवस पर हुए कई कार्यक्रम

बड़ा उपासरा में शांति स्नात्र पूजा का हुआ आयोजन

जैन भवन में हुआ सामूहिक गुरु इकतीसा पाठ का आयोजन

भादरिया गोशाला में हुआ जीवदया के कार्यक्रम का आयोजन

जैसलमेर, 22 सितम्बर। जैन ट्रस्ट जैसलमेर एवं सकल जैन समाज के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 2 का चातुर्मास स्वर्णनगरी में आराधना पूर्वक चल रहा है। चातुर्मास के मध्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. सा. के जन्मदिवस के उपलक्ष में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा जैसलमेर एवं खरतरगच्छ पार्श्व महिला परिषद जैसलमेर के तत्वाधान में प्रात: 9 बजे भगवान गोड़ी पार्श्वनाथजी का बड़ा उपासरा में भव्य भजनों के माध्यम से सामूहिक स्नात्र पूजा का भव्य आयोजन किया गया तत्पश्चात नवकार जाप एवं केशर पूजा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन एवं प्रभावना का लाभ श्री भगवानदासजी जिंदानी परिवार ने लिया।

साथ ही सिटीपार्क के पास बाड़मेर रोड पर स्थित भादरिया गोशाला में जीवदया का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रात्रि 9 बजे स्थानीय जैन भवन में सामूहिक दादागुरुदेव इकतीसा पाठ का आयोजन उल्लास पूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ। जिसका लाभ श्री भगवानदासजी जिंदाणी परिवार ने लिया।

–तरुण जिंदाणी, जैसलमेर

भिवंडी में चातुर्मास महोत्सव

भिंवडी 13 जुलाई। श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी में खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गुरुवर्या डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्याएं पू. साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी नीतिप्रभाश्रीजी म.सा. का भिवंडी में चातुर्मास प्रवेश उल्लास, उमंग के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पू. साध्वीवर्या द्वारा मंगलाचरण पश्चात् ज्ञानवाटिका की बालिकाओं ने नृत्य द्वारा स्वागत किया। महेशजी मालू, श्रीमती कान्ताजी, श्रीमती किरणजी वैद ने गुरु भक्ति गीतिका द्वारा साध्वीश्री को बधाया। श्रीमती रिंकु पारिवारिक संस्मरण सुनाते हुए भाव विभोर हो गई।

मुंबई से पधारे अशोककुमारजी श्रीश्रीश्रीमाल, प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल एवं चंपालालजी वाघेला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा-भिवंडी संघ का अहोभाग्य है, जो चातुर्मास मिला। आप सभी को पूरा-पूरा लाभ उठाना है। कांबली वोहराने का लाभ-कालुचंदजी अशोककुमारजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचोर ने लिया।

अनीलजी छाजेड ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा- हम खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री एवं बहिन म. के आभारी है, जिनकी महती कृपा से चातुर्मास मिला। पू. साध्वीजी भगवंत गुर्वाज्ञा का पालन करते हुए पालीताणा से अल्प समय में उग्र विहार कर संघ को आराधना करवाने हेतु पधारे हैं।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए पू. साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. ने कहा- चातुर्मास आराधना का उत्सव है। हमें ज्यादा से ज्यादा आराधना-साधना, तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान, संयम से जुड़कर सफल करना है। पू. साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. ने कहा मनुष्य जीवन अनमोल है। आपको चातुर्मास का योग मिला है अब इसका प्रयोग करना है।

धर्मसभा में बेंगलोर, मुंबई, भायंदर, कल्याण, बड़ौदा से गुरुभक्तों का आगमन हुआ।

प्रतिदिन नियमित समय पर जिनवाणी श्रवण का लाभ ले रहे है। लोगों में उत्साह व उमंग का वातावरण बना हुआ है। प्रत्येक रविवार को नये-नये धार्मिक आयोजन हुए। जिसमें संयम उपकरण वंदनावली का भव्य आयोजन हुआ जिसमें सभी उपकरणों का चढावा आराधना में बोला गया, सभी ने बढ-चढकर लाभ लिया।

नवकार दरबार में 68 दिवसीय नवकार महामंत्र की आराधना चालु है, जिसकी पूर्णाहुति आसोज शुक्ला पूर्णिमा को होगी। खरतरगच्छ दिवस के उपलक्ष में सामूहिक सामायिक के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ उठाया। साध्वीश्री की पावन प्रेरणा से श्रीमती उषाजी अनिलजी छाजेड़ ने मासक्षमण तप करके अपने पूर्व संचित कर्मों को क्षय करने का अनुमोदनीय पुरुषार्थ किया। पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिदिन नियमित कार्यक्रम के दौरान प्रातः स्नात्रपूजा, पश्चात् प्रवचन, दोपहर में परमात्मा की आंगी रचना, शाम प्रतिक्रमण पश्चात् प्रभु भक्ति का भव्य कार्यक्रम, जिसमें सभी ने भाग लिया। पॉचवें दिन प्रभु महावीर का जन्म कल्याणक वांचन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दादावाड़ी प्रांगण में प्रथम बार 27 की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने संवत्सरी महापर्व के दिन पौषध व्रत की आराधना करके जीवन को धन्य बनाया। गुरु भक्त महेशजी मालू ने आठ दिनों तक प्रभु भक्ति की सरिता बहाकर सभी को भाव विभोर किया। पू. साध्वी नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा. के वीस स्थानक पद की ओली शातापूर्वक संपूर्ण हुई। इस उपलक्ष में सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम रखा गया। पू. साध्वीश्री ने इस आराधना से जुड़ने का संदेश दिया।

प्रेषक- महेश जैन

चातुर्मास विनंती

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आगामी चातुर्मास हेतु सोलापुर, बैंगलोर, सूरत आदि क्षेत्रों से भावभीनी विनंतियाँ गच्छाधिपतिश्री के चरणों में निवेदित की गई।

सोलापुर श्री संघ ने बडी संख्या में उपस्थित होकर विनंती करते हुए कहा- चातुर्मास कराने की हमारी विनंती पिछले 15 वर्षों से समय-समय पर की जाती रही है। इस वर्ष आपश्री महाराष्ट्र क्षेत्र की स्पर्शना कर रहे हैं। हमारी भावभीनी विनंती है कि आगामी चातुर्मास आपश्री का सोलापुर नगर में हो।

बैंगलोर संघ ने अपनी विनंती प्रस्तुत करते हुए कहा- दक्षिण प्रदेश में गच्छ के कई कार्य होने हैं, अत: आगामी चातुर्मास का लाभ हमारे क्षेत्र को मिले, ऐसी आज्ञा प्रदान करावें।

बाडमेर श्री संघ सूरत ने विनंती करते हुए कहा- सूरत में बाडमेर श्रीसंघ बडी संख्या में निवास करता है। इस वर्ष सूरत आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। चातुर्मास मिलने से गच्छ को बहुत मजबूती और निष्ठा मिलेगी।

पूज्यश्री ने फरमाया- अभी यह चातुर्मास चल रहा है। होली के आसपास चातुर्मास का निर्णय किया जायेगा। संभवत: 26 फरवरी 2020 को समुदाय के चातुर्मासों की घोषणा की जायेगी। उस अवसर पर जैसा योग होगा, वैसा निश्चित किया जायेगा।

पार्श्व भवन में ज्ञान वाटिका का हुआ शुभारम्भ

बाड़मेर 28 सितंबर। कल्याणपुरा महावीर चौक स्थित पार्श्व भवन में ज्ञान वाटिका का शुभारंभ किया गया। पू. आचार्य भगवन्त खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से सम्पूर्ण भारतभर में ज्ञान वाटिका संस्थाएं चालू करने के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। जिसके माध्यम से बच्चों में धार्मिक शिक्षा व संस्कार देने के उद्देश्य से यह ज्ञान वाटिका खोली जा रही है। जिसका संचालन अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद व अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के द्वारा किया जा रहा है।

-केवलचन्द छाजेड़, सचिव केयुप बाड़मेर

कुशल वाटिका, बाडमेर के चुनाव संपन्न

श्री जनकुशलसूरिस ेवाश्रमस ंस्थान,क ुशलव ाटिकाब ाडमेरक ेच ुनावप ूज्यग ुरुदेवग च्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में धूलिया नगर में संपन्न हुए।

सर्वसम्मति से श्री भंवरलालजी छाजेड को पुन: अध्यक्ष चुना गया। उन्हें पूरी कार्यकारिणी के गठन का अधिकार प्रदान किया। श्री छाजेडजी पूज्यश्री एवं कुशल वाटिका की संस्थापिका पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. से विचार विमर्श कर पूरी कार्यकारिणी की घोषणा करेंगे।

इस बैठक में कोषाध्यक्ष श्री बाबुलालजी बोथरा द्वारा कुशल वाटिका का हिसाब प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

पूज्यश्री ने बैठक में सुझाव दिया कि कुशल वाटिका में जिनमंदिर के पीछे बनने वाले समवशरण में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की 52 फीट की विशाल प्रतिमा बिराजमान करने का निर्णय किया गया है। चारों दादा गुरुदेव समवसरण में नीचे हॉल में बिराजमान कर रहे हैं। अत: उपर जो गुरुदेव की प्रतिमा बिराजमान करने का निर्णय है, उसके स्थान पर परमात्मा महावीर की 55 फीट की प्रतिमा बिराजमान करने का निर्णय किया जावे।

सभी सदस्यों ने विचार-विमर्श कर इस सुझाव का स्वागत किया। निर्णय किया गया कि समवशरण में परमात्मा महावीर की 55 फीट की विशाल प्रतिमा प्रतिष्ठित की जावे। धन्यवाद के साथ बैठक का समापन हुआ।

दादा गुरुदेव का 108 जोड़ों ने किया भक्ति–भाव से महापूजन

बीकानेर 02 अक्टूबर। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में पांच पंचाह्निका महोत्सव मनाया गया। बागड़ी मोहल्ले की ढढ्ढा कोटड़ी में 108 जोड़ों ने भक्ति गीतों व श्लोकों के साथ दादा गुरुदेव का महापूजन किया। महापूजन का लाभ सुंदरलाल संदीप सौरभ बोथरा परिवार उदरामसर ने लिया। साथ ही पर्युषण पर्व के दौरान विभिन्न तपस्याएं करने वाले श्रावक-श्राविकाओं व विविध प्रतियोगिता में विजेताओं को चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मल धारीवाल, खरतरगच्छ महिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती चारू नाहटा, सामयिक महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती संतोष नाहटा ने पुरस्कृत किया।

पूजा विधिकारक यशवंत गोलेछा व संजय ककरेचा के साथ साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म. ने श्लोकों का वांचन व वरिष्ठ कलाकार सुनील पारख, नेहा पारख और अरिहंत नाहटा ने अनेक भक्ति गीत व दोहे गाकर माहौल को करीब 5 घंटें तक भक्तिमय बनाएं रखा। साथ ही महोत्सव में 18 अभिषेक, भक्तामर महापूजन आदि के समारोह भी संपन्न हुए।

बाडमेर में ता. 26 फरवरी को भागवती दीक्षा

धुलिया 21 सितंबर। बाडमेर निवासी श्री जगदीशजी संखलेचा की सुपुत्री कुमारी राजेश्वरी उर्फ पूजा संखलेचा की भागवती दीक्षा फाल्गुन शुक्ल 3 को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में बाडमेर नगर में संपन्न होगी।

श्री संखलेचा परिवार बाडमेर श्री संघ के साथ पूज्यश्री से दीक्षा की अनुज्ञा प्राप्त करने, दीक्षा की विनंती करने व दीक्षा मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती लेकर धुलिया नगर में ता. 21 सितम्बर को पहुँचा।

कुमारी पूजा ने भावभरे शब्दों में संसार की असारता का वर्णन करते हुए पूज्यश्री से दीक्षा प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती को स्वीकार करते हुए 26 फरवरी 2020 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। कुमारी पूजा पिछले लम्बे समय से पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के पास चारित्र-शिक्षा प्राप्त कर रही है।

शुभ मुहूर्त्त की उद्घोषणा श्रवण कर सकल श्रीसंघ में परम आनंद छा गया। धुलिया श्रीसंघ, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् आदि द्वारा मुमुक्षु पूजा व संखलेचा परिवार का बहुमान किया गया।

श्री जीरावला पार्श्वनाथ जिनकुशलसूरि ट्रस्ट, जीरावला

संरक्षक- डॉ. श्री यू. सी. जैन, उदयपुर
श्री द्वारकादासजी डोसी, बाडमेर
श्री उत्तमचंदजी रांका, चेन्नई
संयोजक- श्री कैलाश संखलेचा, चेन्नई, जिनमंदिर, दादावाडी निर्माण समिति
अध्यक्ष- श्री प्रवीणकुमारजी संखलेचा, हैदराबाद
वरिष्ठ उपाध्यक्ष- श्री अरविन्दजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर
उपाध्यक्ष-श्री लक्ष्मीचंदजी गांधी, चितलवाना
श्री भंवरलालजी मंडोवरा, अहमदाबाद
महामंत्री- श्री प्रकाशचंदजी छाजेड, जालोर
निर्माण मंत्री- श्री धर्मेन्द्रजी पटवा, जालोर
कोषाध्यक्ष- श्री दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
सदस्य- श्री बाबुलालजी श्रीश्रीश्रीमाल- मुंबई
श्री अशोककुमारजी गोलेच्छा, विजयवाडा
श्री पुरुषोत्तमजी सेठिया, बालोतरा
श्री अशोककुमारजी संखलेचा
श्री राजेशजी कटारिया, चेन्नई
श्री गौतमकुमारजी संखलेचा, चेन्नई
श्री धनराजजी देसाई, मल्हारपेठ
श्री राकेशजी धारीवाल, जोधपुर
श्री धनराजजी चौपडा, अहमदाबाद

नवकार जाप समापन संपन्न

हिंगनघाट। श्री जैन श्वेतांबर पार्श्वनाथ मंदिर हिंगनघाट पर महत्तरा पू. गुरुवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की सुशिष्या सरलमना पू. सुभद्राश्रीजी म., पू. शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा 4 के सानिध्य में 68 दिवसीय महामंत्र णमोकार दरबार का समापन 13 अक्टूबर को होगा।

प्रत्येक जाप करने वाले सदस्य को घंटों के हिसाब से लकी ड्रॉ कूपन भी बांटे जाऐंगें। जिनका ड्रा जाप के अंतिम दिन 13 अक्टूबर को निकाला जाएगा। इसके अलावा दि. 4 अक्टूबर से 9 दिवसीय अंखड जाप प्रारंभ, दि. 6 अक्टूबर को दादागुरुदेव की पूजा श्री जिनकुशलसूरि जैन नवयुवक मंडल नागपुर द्वारा, दि. 7 अक्टूबर 2019 को श्रीपाल मैनासुंदरी विवाह प्रसंग नाटिका, दि. 8 अक्टूबर 2019 को छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणी महत्तरा पद विभूषिता पू. गुरुवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की चौदहवीं पुण्यतिथी निमित्त सामूहिक 9 सामायिक, आयंबिल एवं गुणानुवाद सभा, दि. 9 अक्टूबर को रत्नत्रयी पूजा एवं रात्रि में सांस्कृतिक प्रोग्राम- श्री पार्श्व कीर्ति महिला मंडल द्वारा, दि. 10 अक्टूबर को मातृ-पितृ वंदनावली, दि. 11 अक्टूबर को नंदीश्वर द्वीप महापूजा, दि. 12 अक्टूबर को पू. साध्वी शुभंकराश्रीजी म. के 500 आयंबिल तप अनुमोदनार्थ तप वंदनावली व गाँव सांझी व रात्रिभक्ति, दि. 13 अक्टूबर को नवकार जाप की पूर्णाहुति होगी।

दि. 14 अक्टूबर को अभिमंत्रित कलशों की भव्य शोभायात्रा में समाज के स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी भाग लेंगें।

-राजेश अमरचंद कोचर

सादर श्रद्धांजलि

श्री किरणमलजी सावनसुखा

सभी समाजों के प्रति समभाव रखने वाले भामाशाह श्रीमान किरणमलजी सावनसुखा का स्वर्गवास 6 सितंबर को हो गया। आप मिलनसार एवं देव-गुरु पर परम आस्था रखते थे। समाज के विविध आयोजनों में आपका सदैव सहयोग रहता था। आपके स्वर्गगमन से एक दानवीर व्यक्तित्व का अभाव हुआ है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री यशवर्धनजी गुलेच्छा

फलोदी निवासी धर्मपरायण देव-गुरु अनुरागी श्री यशवर्धनजी गुलेच्छा (पप्पुसा) का स्वर्गवास दि. 1 अक्टुंबर को हो गया।

आपके मार्गदर्शन में रामदेवरा स्थित जिनमंदिर, बिकमपुर स्थित जिनमंदिर एवं खेतासर आदि के संकुल सहित अनेक कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करते थे। प्रतिदिन प्रभु पूजा, सामायिक आदि अवश्य करते थे। आपके आकस्मिक स्वर्गवास से संघ में अपूरणीय क्षति हुई है।

जहाज मंदिर परिवार से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर प्रतिदिन टेलिफोन ऑपरेटर के यहाँ फोन करता था। शाम को पांच बजने होते कि वह चार-पाँच बार फोन करता था।

फोन में टाइम पूछ कर फोन रख देता था।

दस-पन्द्रह दिनों तक तो ऑपरेटर ने बिना कुछ पूछे जवाब दिया। पर एक दिन उसने पूछा- भाई तुम कौन हो! और प्रतिदिन फोन क्यों करते हो!

जटाशंकर ने जवाब दिया- समय पूछने के लिये! क्योंकि आपके वहाँ की घड़ी परफेक्ट होती है। सही समय बताती है। बाकी की घड़ियों पर मेरा भरोसा नहीं है।

ऑपरेटर ने पूछा- पर रोज पांच बजे ही फोन क्यों करते हो!

जटाशंकर ने कहा- मैं मिल में काम करता हूँ। शाम को ठीक पाँच बजे सायरन बजाने की मेरी ड्यूटी है। आपसे समय पूछ कर मैं सायरन बजाता हूँ।

ऑपरेटर बोला- अरे! मैं रोज मिल के सायरन की आवाज सुनकर ही घड़ी सेट करता हूँ। क्योंकि मिल का सायरन ठीक 5 बजे ही बजता है।

सुनकर दोनों मुस्कुराने लगे।

सायरन की आवाज से घड़ी मिलाई जाती है। और उसी घड़ी के आधार पर सायरन बजता है। दोनों एक-दूसरे पर आधारित है। सही समय दोनों को नहीं मिल सकता। ठीक ऐसी ही हमारी दुनिया है। सब एक-दूसरे से सुख चाहते हैं। मिलता किसी को नहीं।

सकल संघ को सूचना

इस वर्ष (वि.सं. 2076) कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा का क्षय हो रहा है। अत: यह प्रश्न है कि परमात्मा महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक कब मनाया जाये एवं गौतमस्वामी का रास वांचन कब हो!

समाधान यह है कि परमात्मा महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्णा अमावस्या को अंतिम प्रहर में हुआ था। तत्पश्चात् गौतमस्वामी को केवलज्ञान हुआ था।

इस वर्ष कार्तिक कृष्णा अमावस्या **28 अक्टूबर सोमवार** को है। अत: 28 अक्टूबर सोमवार की रात्रि में निर्वाण कल्याणक संबंधी जाप होंगे तथा अंतिम प्रहर में अर्थात् **29 अक्टूबर मंगलवार** को प्रात: निर्वाण कल्याणक का लड्डू चढाया जायेगा। निर्वाण लड्डू चढाने के पश्चात् श्री गौतमस्वामी के रास का वांचन किया जायेगा।

-गच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

।। श्री शंखेश्वर-पंचासरा पार्श्वनाथाय नमः ।।
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्
द्वारा आयोजित
खरतरगच्छ नामकरण सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में
श्री शंखेश्वर महातीर्थ से पाटण महातीर्थ
छःरि पालित यात्रा संघ का भव्य आयोजन
संघ प्रस्थान
पोष सुदि १३
बुधवार
दि. 08-01-2020
-: निश्रा दाता :-
खरतरगच्छाधिपति, अवंति तीर्थोद्धारक,
Kयुप एवं के.एम.पी. प्रणेता प.पू. गुरुदेव आचार्य प्रवर
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
संघ माला
माघ वदि २
रविवार
दि. 12-01-2020
मुख्य लाभार्थी
श्रीमती गजीदेवी मिश्रीमलजी बोथरा परिवार - विशाला-अहमदाबाद
१. हर यात्री को छःरि का पालन अनिवार्य होगा ।
A. प्रतिदिन एकासणा करना ।
B. सचित आहार का त्याग करना ।
C. जयणापूर्वक पैदल यात्रा करना ।
D. दोनो समय प्रतिक्रमण करना ।
E. संथारे पर शयन करना ।
F. ब्रह्मचर्य का पालन करना ।
२) गुरु भगवंतो के आदेशो का पूर्ण पालन करना ।
३) स्नात्र पूजा, प्रवचन आदि हर कार्यक्रम में पूरा भाग लेना ।
संपर्क सूत्र
पद्म वरडिया (चेयरमेन) 9827159311
सुरेश लुणिया (अध्यक्ष) 9444007762
योगेन्द्र संघवी (वरि. उपाध्यक्ष) 9833433801
रमेश लुंकड (सचिव) 9423286112
राजीव खजांची (कोषाध्यक्ष) 9414137914
ललीत डाकलिया (सह सचिव) 9844251261
प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल (संघ संयोजक) 9324242400
स्थानीय संपर्क :
आवेदन पत्र निम्न पते पर दि. 01-12-2019 तक भिजवाये ।
आयोजक : अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्
द्वारा - ई - 201/202, सिटी सेन्टर - 1, ईदगाह पुलिस चौकी के पीछे, शाहीबाग रोड, अहमदाबाद - 380004 (गुजरात)

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

सूरत–पाल नगर में

श्री शंखेश्वरा हाईट्स में

स्वद्रव्य से निर्मित

भव्यातिभव्य उज्ज्वल धवल उत्तम पाषाण से निर्मित शिखरबद्ध

श्री शांतिनाथ जिन मंदिर का

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

~ पावन निश्रा ~

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

❋ महोत्सव प्रारंभ ❋	❋ वरघोडा ❋	❋ प्रतिष्ठा ❋
मिगसर सुदि 6, ता. 2.12.2019	मिगसर सुदि 9, ता. 5.12.2019	मिगसर सुदि 10, ता. 6.12.2019

महोत्सव स्थल-श्री शंखेश्वरा हाइट्स, संजीवकुमार ऑडिटोरियम के पीछे, पाल, सूरत

❋ निवेदक ❋

संघवी मातुश्री पारूदेवी दलीचंदजी मरडिया परिवार

चितलवाना हाल-सूरत

❋ आयोजक ❋

संघवी शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार

शा. मोहनलालजी लालचंदजी शांतिलालजी घेवरचंदजी राजमलजी मरडिया

संपर्क सूत्र- 94273 21982 / 94286 30935

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा बोहल्ला, शिवगंज रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408